सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

सितम्बर, 2018 वर्ष 17 अंक 07

शहादत

शहादत बड़ी चीज़ है दोस्तो!
शहादत ख़ुदा से तलब तुम करो
तमन्ना शहादत की, की थी नबी ने
मिरारन शहादत थी चाही नबी ने
शहीदों के सय्यिद हैं हमज़ा यक़ीनन
नबी ने ये उनको कहा है यक़ीनन
हैं फ़ारूक़े आज़म भी आ़ला शहीद
हैं आ़ला शहीदों में उस्मां शहीद
अ़ली मुर्तज़ा और ह़सन हैं शहीद
हुसैने अ़ली कर्बला के शहीद
शहीदों का दर्जा बहुत है बड़ा
मुझे भी शहादत मिले या ख़ुदा
हूं पढ़ता नबी पर दुरूदो सलाम
उन पे लाखों दुरूद और लाखों सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। SACHCHARAHI A/c. No. 10863759642 IFS Code: SBIN0000125 Swift Code: SBININBB157 State Bank of India, Main Branch, Lucknow. और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें। बराये करम पैसा जमा हो जाने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 या ईमेल पर खरीदारी नम्बर के साथ इत्तिला ज़रूर दे दें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
शहीद की ज़िन्दगी	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0	16
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	18
प्रदूषित पानी से मानव जीवन	रऊफ़ आज़मी	21
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
शर्मो हया व पर्दा (पद्य)	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	28
शादी ख़ाना आबादी	मौलाना अब्दुल क़ादिर नदवी	29
न्याय की दुन्या	डॉ0 मुहम्मद अहमद	34
इल्म की क़द्र	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	39
उर्दू सीखिए	इदारा	41
अहले ख़ैर हज़रात	इदारा	42

क़ुआनि की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-माइदाः

अनुवाद–

यहूदी व ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं, आप पूछिये कि फिर वह तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें दण्ड क्यों देता है? कोई नहीं तुम भी उसकी सृष्टियों में से मात्र एक मनुष्य हो, वह जिसको चाहे माफ़ करे और जिसको चाहे अज़ाब दे और आसमानों और ज़मीन और दोनों के बीच की बादशाही अल्लाह ही की है और उसी की ओर लौट के जाना है[1](18) ऐ अहले किताब! पैग़म्बरों के एक लंबे अंतराल के बाद तुम्हारे पास हमारे पैगम्बर आ गए जो तुम्हें साफ़ साफ़ बताते हैं कि कहीं तुम यह न कहने लगो कि हमारे पास न कोई खुशख़बरी देने वाला आया न डराने वाला, बस अब तो शुभ समाचार सुनाने वाला और डराने वाला तुम्हारे पास आ चुका और अल्लाह को हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य (कुदरत) प्राप्त है[2](19) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा था ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब उसने तुममें पैग़म्बर पैदा किये और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो संसारों में किसी को न दिया था(20) ऐ मेरी क़ौम! उस पवित्र भूमि में प्रवेश करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए तय कर दी है और उलटे पांव मत फिरो वरना घाटे में जा पड़ोगे[3](21) वे बोले ऐ मूसा! उसमें तो बड़े ज़बर्दस्त लोग हैं और वे जब तक न निकल जाएं हम उसमें प्रवेश कर ही नहीं सकते, हां अगर वे निकल जाते हैं तो हम ज़रूर प्रवेश करने को तैयार हैं(22) डरने वालों में से दो आदमी ने जिन पर अल्लाह का इनआम था बोल पड़े दरवाज़े से हमला करके दाखिल तो हो जाओ, फिर जब तुम वहां दाखिल हो जाओगे तो तुम ही ग़ालिब (प्रभावी) रहोगे और अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो[4](23) वे बोले ऐ मूसा! जब तक वे लोग वहां मौजूद हैं वह हरगिज़ दाख़िल नहीं हो सकते बस तुम और तुम्हारा पालनहार दोनों जाएं और लड़ें हम तो यहीं बैठे हैं(24) मूसा ने कहा ऐ मेरे पालनहार! मैं तो केवल अपने ऊपर और अपने भाई पर बस रखता हूं तू हमारे और नाफ़रमान क़ौम के बीच फ़ैसला कर दे(25) उसने कहा यह जगह चालीस साल तक के लिए उन पर हराम

कर दी गई, वे ज़मीन में मारे मारे फिरेंगे बस तुम नाफ़रमान कौम पर तरस मत खाना[5](26) और आदम के दोनों बेटों की कहानी ठीक–ठीक उनको सुना दीजिए[6] जब दोनों ने कुर्बानी पेश की तो उनमें एक की कुर्बानी स्वीकार हुई और दूसरे की स्वीकार न हुई तो वह बोला मैं तो तुम्हें क़त्ल करके रहूंगा, पहला बोला कि अल्लाह तो परहेज़गारों ही से कुबूल करते हैं(27) अगर तुम मेरे क़त्ल के लिए हाथ बढ़ाते भी हो तो मैं तुम्हें क़त्ल करने के लिए हाथ नहीं बढ़ा सकता मैं तो उस अल्लाह से डरता हूं जो संसारों का पालनहार है(28) मैं चाहता ही हूं कि तुम मेरे गुनाह और अपने गुनाह दोनों का बोझ उठाओ फिर दोज़ख वालों में शामिल हो जाओ और ज़लिमों की सज़ा यही है[7](29) अतः उसके मन ने उसको अपने भाई के क़त्ल पर उभार दिया तो उसने उसको मार डाला बस वह घाटा उठाने वालों में हो गया(30) फिर अल्लाह ने एक कौवा भेजा जो ज़मीन खोदने लगा ताकि उसको सिखा दे कि वह अपने भाई की लाश को कैसे छिपाए, वह बोला हाय मेरा नास मुझ से यह भी न हो सका कि मैं उस कौवे ही की तरह हो जाता और अपने भाई की लाश को छिपा देता, बस वह पछताने लगा(31)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यहूदियों की कल्पना थी कि याकूब अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह ने अपना बेटा कहा और ईसाई ईसा को खुदा का बेटा कहते थे इसलिए अपने बारे में लगभग उनका यही ख़याल था कि हम अल्लाह के बेटे और चहेते हैं।

2. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद लगभग छः सौ साल कोई पैग़म्बर नहीं आया, सारा संसार विनाश के किनारे पहुंच गया तो अल्लाह ने महानतम मार्गदर्शक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा।

3. यानी शाम (सीरिया) जिसमें फिलिस्तीन भी शामिल था, वहां अमालेक़ह (एक जाति) रहते थे जो बड़े डील–डौल वाले थे, बनी इस्राईल आदेश के अनुसार चले जब क़रीब पहुंच कर उनको अमालेक़ह के डील–डौल और उनकी ताक़त का पता चला तो मुकर गये और कहने लगे कि हम कैसे इस देश में दाख़िल हो सकते हैं।

4. आदेश जो भी दिया गया पहले उस पर अमल तो करो फिर अल्लाह की मदद भी आ जाएगी और तुम से जो वादा किया गया है वह पूरा हो जाएगा, यह बात कहने वाले दो लोग हज़रत यूशअ़ और हज़रत कालिब अलैहिस्सलाम थे जो हर चरण में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ थे बाद में अल्लाह ने उनको पैग़म्बरी से सम्मानित भी किया।

5. उन्होंने बात न मानी और बहुत ही अपमान जनक बात कही तो अल्लाह ने उसी सैना नामक प्रायद्वीप में उनको भटकते हुए छोड़ दिया, क्योंकि

शेष पृष्ठ....24 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

अल्लाह के अलावा दूसरे की क़सम खाने की मुमानियतः–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम को बाप दादा की क़सम खाने से मना फरमाया है, जिसको क़सम खाना हो वह अल्लाह की कसम खाये वरना खामोश रहे। (बुखारी—मुस्लिम)

एक सही रिवायत है कि जो शख़्स क़सम खाना चाहे तो उसको चाहिए कि वह अल्लाह की क़सम खाये वरना खामोश रहे।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि न तुम बुतों की कसम खाओ न बाप दादा की। (मुस्लिम)।

हज़रत बुरैदाः रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अमानत की कसम खाये वह हम से नहीं अर्थात वह हमारे रास्ते पर नहीं है। (अबू दाऊद)

हज़रत बुरैदः रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर किसी ने झूठी क़सम खाई कि अगर मैं ऐसा हूं तो इस्लाम से बरी हूं तो अगर उसने झूठ कहा तो हक़ीक़त में इस्लाम से बरी हो गया और सच बोला है तो भी उसका दीन सलामत नहीं रहा। (अबू दाऊद)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने एक शख्स को काबा की क़सम खाते सुना तो फरमाया अल्लाह के सिवा किसी की क़सम न खाओ, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जो अल्लाह तआला के सिवा किसी की क़सम खाये तो उसने कुफ्र किया या शिर्क किया।

(तिर्मिजी)

झूठी कसम खा कर माल हजम कर लेने की सजाः–

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर कोई शख़्स किसी मुसलमान का माल दबा बैठे और क़सम खा ले कि मेरा माल है तो कयामत के दिन अल्लाह तआला उस पर गुस्सा होंगे, फिर आपने उसकी तस्दीक़ में कलामुल्लाह की यह आयत पढ़ी—

अनुवादः— *बेशक वह लोग जो अहदों और अपनी क़समों के बदले थोड़ा हिस्सा मोल ले लेते हैं तो वे लोग हैं कि उनका आखिरत में कोई हिस्सा नही, न अल्लाह उनसे बात करेगा न उनकी तरफ देखेगा और न उनको पाक करेगा, उनके लिए दर्दनाक अजाब है।*

(सूरः आलेइमरान—8)

हज़रत अबू उमामा अयास बिन स़अलबा हारसी रज़ि0 से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो किसी मुसलमान का हक़ झूठी क़सम खा कर दबा लेगा तो अल्लाह उस पर जन्नत हराम कर देगा और दोजख वाजिब कर देगा, एक शख्स ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह अगर मामूली चीज हो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगरचि एक पीलू की लकड़ी ही हो।

(मुस्लिम)

गुनाहे कबीराः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह का शरीक ठहराना, वालिदैन की नाफरमानी करना, ना हक खून करना और जान बूझ कर झूठी क़सम खाना कबीरा गुनाह (बड़े गुनाह) हैं। (बुखारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि एक देहाती आया और अर्ज किया या रसूलुल्लाह कौन कौन से गुनाह बड़े हैं, आप ने फरमाया अल्लाह का शरीक ठहराना, उसने अर्ज किया फिर, फरमाया झूठी क़सम खाना, मैंने अर्ज किया इस का क्या मतलब, फरमाया किसी का माल झूठी कसम खा कर दबा लेना।

क़सम खाने के बाद नेकी की बात देख कर उसको इख्तियार करने का आदेशः–

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरः बिन जुनदुब रज़ि0 से रिवायत है कि मुझ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर तुम किसी बात पर क़सम खा लो फिर उससे बेहतर बात देखो तो उसको इख्तियार कर लो और क़सम का कफ़्फ़ारा दे दो।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो किसी बात पर क़सम खाये फिर उस से बेहतर बात देखे तो उसको इख्तियार कर ले और अपनी क़सम का कफ्फ़ारा देदे। (मुस्लिम)

क़सम का कफ़्फ़ारा यह है कि एक गुलाम आजाद करे या दस मिस्कीनों को खाना खिलाये या कपड़े पहनाये जिससे उनका बदन ढ़क जाये या तीन रोज़े रखे। (मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

खुदा के वली

खुदा के वली कौन हैं, आप जानें
जो कुर्आन में है बयां, उसको जानें
खुदा के वली को, नहीं ख़ौफ़ कोई
खुदा के वली को ,नहीं हुज़्न कोई
खुदा की महब्बत से, मग़लूब रहते
नबी की महब्बत से, मसरूर रहते
खुदा की इताअ़त, हमेशा वह करते
हमेशा नबी की, वह सुन्नत पे चलते
खुदा पे जो ईमान, पुख़्ता हैं रखते
खुदा की रिज़ा को, हर इक काम करते
नबी के चहीतों को, शामिल वह कर के
नबी पे दुरुदो सलाम, हैं वह पढ़ते।

❖❖❖

शहीद की ज़िन्दगी

शहीदः— शहीद की बहुत सी किस्में हैं, संक्षेप में यूं समझना चाहिए कि जो व्यक्ति ईमान पर जमा रहा और अल्लाह की ओर से किसी आपत्ति में जान दी एक प्रकार का वह शहीद है, इसी लिए बाज रिवायतों से सिद्ध होता है कि पेट का रोगी उसी रोग में मरा मगर उसका ईमान डावाँ डोल नहीं हुआ अपने ईमान पर जमा रहा और पेट के रोग को सहन करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुआ वह भी एक प्रकार का शहीद है, इसी तरह जो अपने वैध माल या संपत्ति की सुरक्षा में डाकुओं द्वारा मारा गया वह भी शहीद है, जो अपनी जान की सुरक्षा में मारा गया वह भी शहीद है, जो स्त्री प्रसव के कष्ट में मरी वह भी शहीद है, जो ईमान वाला डूब कर या आग में जल कर या एक्सीडेंट में मरा या किसी हिंसक पशु ने उसे फाड़ खाया यह सब एक प्रकार के शहीद हैं और अल्लाह तआला से यही आशा है कि यह सब बख्शे जाएंगे, अल्लाह की प्रसन्नता पायेंगे, जन्नत के पुरस्कार से आनन्दित किये जाएंगे परन्तु उत्तम कोटि का शहीद वह है जो इस्लाम के शत्रुओं से लड़ते हुए युद्ध स्थल में शत्रुओं द्वारा मारा गया हो या जो इस्लाम पर जमा हो और किसी इस्लाम दुश्मन ने उस पर आक्रमण करके या ज़हर दे कर उसका वध कर दिया हो या विद्रोहियों ने उसका वध कर दिया हो जैसे दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि0 को अबू लूलू ने नमाज़ की हालत में शहीद कर दिया, या जैसे तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि0 को विद्रोहियों ने क़त्ल किया और आप ने उनके मुक़ाबले के लिए एक छड़ी भी न उठाई।

हज़रत उस्मान रज़ि0 का घर विद्रोहियों ने घेर रखा था विभिन्न रिवायतें हैं परन्तु यह सिद्ध है कि कम से कम 27 या 28 दिनों तक आप का घर विद्रोहियों के घेरे में रहा, बाहर से किसी किस्म की खाने पीने की सामग्री नहीं जा सकती थी, सहा—बए—किराम के नव युवक पुत्र गण आपसे अनुमति चाह रहे थे कि अनुमति दीजिए हम इन विद्रोहियों को मार भगायें आप ने कहा हम कलिमा पढ़ने वाले से लड़ने की अनुमति नहीं दे सकते। न हम स्वयं उनका मुक़ाबला करेंगे, फिर विद्रोहियों ने कुर्आन पढ़ने की हालत में आपको शहीद कर दिया।

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

शहीदों के लिए पवित्र कुर्आन में इस प्रकार वर्णन आया है—

अनुवादः *"और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाएं, उन्हें मुर्दा न कहो, ऐसे लोग तो वास्तव में जिन्दा हैं, लेकिन उनकी जिन्दगी को तुम जान नहीं पाते।*

(सूरः अल बक़राः154)

"जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये हैं उन्हें मुर्दा न समझो, वे तो वास्तव में जीवित, अपने रब के पास रोजी पा रहे हैं। जो कुछ अल्लाह ने अपनी उदार कृपा से उन्हें दिया है उस पर प्रसन्न और आनन्दित हैं, और सन्तुष्ट हैं कि जो ईमान वाले उन के पीछे संसार में रह गये हैं और अभी वहां नहीं पहुंचे हैं उन के लिए भी किसी डर और रंज का अवसर नहीं है। वे अल्लाह के इनाम और उसकी उदार कृपा पर आनन्दित और प्रसन्न हैं और उनको मालूम हो चुका है कि अल्लाह ईमान वालों का बदला नष्ट नहीं करता।

(सूरः आले इमरान 169–171)

कैसा एज़ाज़ (सम्मान) है शहीदों का कि अल्लाह तआला का आदेश है कि उनको मुर्दा मत कहो हालांकि मुर्दा उसी को कहा जाता है जिस के प्राण अपने शरीर को छोड़ दें और शहीद के प्राण भी शरीर से अलग हो जाते हैं परन्तु आदेश है कि उनको न मुर्दा समझो न मुर्दा कहो, अवश्य ही उनको ऐसा जीवन मिलता है जिससे वह अपने को जीवित ही समझते हैं प्रत्यक्ष में तो हम को रिवायात से इतना ही पता चलता है कि उनके प्राण सफेद अथवा हरे रंग के पक्षियों के शरीर में रखे जाते हैं वह उड़ उड़ कर जन्नत की नेमतें फल फलारी खाते हैं और नहर का निर्मल तथा स्वादिष्ट जल पीते हैं। अर्श के नीचे लटकी क़न्दीलों में आराम करते हैं और न जाने उनको क्या क्या मिलता है कि पवित्र कुर्आन बताता है कि वह अत्यन्त प्रसन्न रहते हैं, अपने जीवन पर भी और जो ईमान वाले अभी दुन्या ही में हैं उनका अंजाम ज्ञात कर के भी बहुत ही प्रसनन रहते हैं। इस पर भी जब अल्लाह तआला उनसे पूछता है कि तुम क्या चाहते हो तो वह जन्नत की मजीद नेअ़मतों के बजाय कहते हैं कि हम को दुन्या में जीवित किया जाय और हम फिर शहीद किये जाएं उत्तर मिलता है कि हमारा नियम है कि एक बार शरीर से जीवन अलग करने के पश्चात पुनः संसार में जन्म नहीं देते हैं। इससे ज्ञात होता है कि शहीद को शहादत के समय कोई विशेष प्रकार का स्वाद मिलता है जिसे पाने के लिए शहीद चाहता है कि वह बार –बार जीवित किया जाए और बार–बार शहीद हो कर उस विशेष स्वाद से लाभान्वित हो।

शहीद का अगला जीवन तमाम मुसलमानों के अगले जीवन से उत्तम होता है परन्तु अंबिया अलै0 के जीवन से कम होता है यह हाल तो उनकी बरज़ख़ी ज़िन्दगी का है फिर क़ियामत के पश्चात उनको जन्नत में जो कुछ मिलेगा उस की कल्पना भी असंभव है। निःसंदेह शहीदों का अगला जीवन बहुत ही उत्तम परन्तु अंबिया अलै0 से कम होता है फिर बाज़ अंबिया अलै0 भी तो शहीद हुए हैं उनके अगले जीवन को कोई किस प्रकार समझ सकता और बयान कर सकता है, तभी तो रिवायात में आता है कि हमारे प्रिय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इच्छा

की थी और कहा था कि मेरा मन चाहता है कि मैं शहीद किया जाऊँ, फिर जीवित किया जाऊँ, और फिर शहीद किया जाऊँ, फिर जीवित किया जाऊँ, और फिर शहीद किया जाऊँ अल्लाहु अक्बर! शहादत का दर्जा कितना ऊँचा है, अल्लाह तआला मुझे भी शहादत नसीब फरमाए आमीन।

शहादत के भी दर्जात हैं सबसे ऊँचा दर्जा अंबिया शहीदों का है फिर बाद के शहीदों का, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सय्यिदुश्शुहदाइ हम्ज़ा यानी हज़रत हम्ज़ा शहीदों के सरदार हैं, हज़रत हम्ज़ा प्रिय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हैं। यह उहुद की लड़ाई में शहीद हुए थे अजीब बात है इन को शहीद करने वाला हिन्दा का गुलाम हब्शी ईमान ले आया और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे मॉफ भी कर दिया बस इतना कहा कि मेरे सामने न आया करो क्योंकि तुम्हें देख कर चचा की शहादत याद आ जाती है और दुख होता है। बद्र की लड़ाई और उहुद की लड़ाई में शहीद होने वालों का दर्जा बाद के शहीदों से ऊँचा है और इस्लाम में पहली शहीद हजरत सुमय्या हैं यानी इस्लाम में पहली शहीद एक औरत हैं अल्लाह ने उनको किन किन इनआमात से नवाजा होगा बिअरे मऊना के 69 शहीदों का दर्जा बहुत ऊँचा है जिनकी शहादत पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत दुख हुआ था और आपने लगभग एक महीने तक नमाज़ में क़ुनूत पढ़ी थी अर्थात शहीद करने वालों को श्राप दिया था। हजरत उमर रज़ि0 शहीद होने की दुआ मांगा करते थे। अल्लाह ने उन को शहादत का दर्जा प्रदान किया, हजरत उस्मान रज़ि0 श्हीद किये गये हज़रत अली रज़ि0 शहीद हुए, हज़रत हसन को जहर दे कर शहीद किया गया, और न जाने कितने मुसलमान जंगेजमल और जंगे सिफ्फीन में शहीद हुए उनकी गिनती अल्लाह ही को मालूम है, फिर करबला के मैदान में, हजरत हुसैन रज़ि0 अपने बहत्तर साथियों के साथ शहीद हुए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को हरमे मक्की में शहीद किया गया, हज़रत हुसैन रज़ि0 के पोते हज़रत ज़ैद बिन जैनुल आबिदीन शहीद हुए, मुहम्मद नफ़्सुज्जकीया और उनके भाई इब्राहीम को दौरे अब्बासी में शहीद किया गया। बाद में जो आपकी लड़ाइयों का सिलसिला शुरुअ़ हुआ वह अब तक जारी है, इराक़, शाम, लीबिया, मिस्र, अफ़्गानिस्तान, पाकिस्तान आदि में कौन शुमार कर सकता है कि कितने मुसलमान कहलाने वाले मारे गये और मारे जाते हैं, इन सब के बारे में हम यही कहेंगे कि जो अपने ईमान पर जमा रहा और उसने गुनाह का इरादा

शेष पृष्ठ....24 पर

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

ज़िन्दगी की पूरी तौजीह (विवेचना) वह्इ और पैग़म्बरों की बसीरत (बुद्धिमता) के बिना सम्भव नहीं:–

उन मेटाफिजिकल प्रश्नों के अलावा जिनका जवाब दिये बिना हमारी जिन्दगी हैवानी ज़िन्दगी से विशिष्ट नहीं हो सकती, हम यूं भी वह्इ की रौशनी और पैग़म्बरों के नूरे बसीरत (बुद्धिमता की ज्योति) के बिना अपने जीवन की पूरी विवेचना नहीं कर सकते और उस सर्वव्यापी तथा हकीमाना क़ानून की खोज नहीं कर सकते जो इस आलम में चल रहा है। अपनी स्वयं की सूझ–बूझ व समझ से हम को यह जिन्दगी एक वहदत (एकता) के तौर पर नज़र न आयेगी। बल्कि एक बिखरा हुआ क्रम मिलेगा। जिसके पन्ने बिखरे हुए हैं, इसकी कुछ सतरें और इसके कुछ शीर्षक हम ग़ौर करके पढ़ सकते हैं, मगर इस सृष्टि की किताब का विषय इस किताब का खुलासा इसके लेखक की मंशा, हम को पैग़म्बरों की बसीरत (बुद्धिमता) के बिना मालूम नहीं हो सकती।

मीमांसकों तथा भौतिक शास्त्र विशेषज्ञों ने ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में जो खोज की है, जीवन के बारे में जो यथार्थ खोज निकाले हैं, प्राकृतिक शक्तियों को अपने ज्ञान और प्रयोग से मनुष्य के लिए जिस तरह मातहत बनाया है और जिस तरह ब्रह्माण्ड के एक–एक संकाय और जीवन के एक–एक पहलू के लिए ज्ञान–विज्ञान की शाखें निकालीं और पुस्तकालय उपलब्ध कर दिये वह निःसंदेह इन्सानी ज्ञान का एक कारनामा है। लेकिन यह जो कुछ भी है यह जिन्दगी और कायनात के असल संग्रह के हिस्से हैं जिनमें आपस में कोई जोड़ नहीं, मेल नहीं, न उनका कोई केन्द्र मालूम है। यह सब किस व्यवस्था के अधीन हैं? किस मक़सद के तहत हैं? किस महत्वपूर्ण लक्ष्य के सेवक हैं? इन प्रश्नों का कोई उत्तर वैज्ञानिकों के पास नहीं है। हालांकि ज्ञान की हैसियत से हमारे लिए यही प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि आचरण व व्यवहार और जीवन के बुन्यादी दृष्टिकोण की निर्भरता इन्हीं प्रश्नों पर है। वैज्ञानिकों ने अपनी यात्रा असली शुरुआती बिन्दु (खुदा की पहचान) से शुरु नहीं किया इसलिए वह हमेशा आफाक (क्षितिज) में गुम रहेंगे और जीवन की गुत्थी को कभी सुलझा न सकेंगे।

लेकिन ठीक इसके विपरीत जब हम वह्इ (ईशवाणी) की रौशनी और पैग़म्बर की बसीरत से इस संसार पर नज़र डालते हैं तो वह एक एकाई नज़र आता है

और एक आला एकीकृत व्यवस्था मालूम होता है जिसके हिस्सों में पारस्परिक पूरा सम्पर्क व सम्बन्ध है, सब एक केन्द्र के अधीन हैं। इनकी हर हरकत और कार्य एक मक़सद के अन्तर्गत है, इनमें न आपसी टकराव है, न स्वार्थ। दुन्या एक सुगठित संतुलित मशीन है जिसका हर पुर्जा अपनी जगह पर उपयोगी है और दूसरे पुर्जे की सहायता कर रहा है, या एक बड़ा कारखाना है जिसमें सैकड़ों मशीनें चल रही हैं। हर मशीन को दूसरी मशीन से पूरा संबंध है और यह पूरी मशीनरी या पूरा कारखाना एक ज्ञानी व साधिकार ताक़त के हाथ में है जो इसको एक कानून और व्यवस्था के अन्तर्गत जो उसी का बनाया हुआ है, चला रहा है।

नबियों और अनुसंधान–कर्ताओं के विचार व कार्य–विधि का मतभेदः–

अंबिया, दार्शनिकों और अनुसंधानकर्ताओं के दृष्टिकोण और कार्य–विधि का इस ब्रह्माण्ड के बारे में जो मतभेद है उसे हम एक उदाहरण से स्पष्ट करते हैं।

किसी शहर में विद्वानों और शोधकर्ताओं की एक टोली दाखिल होती है। उनमें से एक गिरोह यह जांच करता है कि इस नगर की वस्तु स्थिति क्या है? इसका आक्षांश–देखान्तर क्या है? उसके पास कितनी नदियां और कितने पहाड़ हैं और नदियां कहां से आती हैं और पहाड़ कहां तक जाते हैं, शहर का क्षेत्रफल क्या है वहां क्या चीजें पैदा होती हैं? यह भुगोल देत्ताओं का गिरोह है। दूसरा गिरोह यह खोज करता है कि यह शहर कब से आबाद है? शहर में कौन–कौन से पुरातत्व पाये जाते हैं? इनका इतिहास क्या है? यह इतिहासकारों और पुरातत्व वेत्ताओं की टोली है।

कुछ लोग इसकी ज़मीन की हैसियत मालूम करते हैं, खुदाइयां करते हैं और इसके खनिजों की खोज करते हैं। यह भूगर्भशास्त्र देत्ताओं का गिरोह है। कुछ लोग वहां एक वैधशाला कायम करते हैं जहां से ग्रहों का अध्ययन करते हैं। यह लोग अन्तरिक्ष –विज्ञानी हैं। कुछ लोग वहां प्रयोगशाला कायम कर दवाइयों की विशेषताओं का अनुभव कर नए नए शोध करते हैं। यह रसायन व वनस्पति शास्त्र विशेषज्ञ हैं। कुछ लोग शहर की भाषा के संबंध में शोध करते हैं उसके साहित्य का अध्ययन करते हैं, यह साहित्यकारों का गिरोह है। कुछ लोग इन शुष्क विषयों से हट कर फूल–पत्तियों और प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेते हैं और उनके संबंध में प्रभावी व आकर्षक शैली में अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं, यह कवियों की टोली है। कुछ लोग वहां के रीति–रिवाज, आचार–व्यवहार, रहन–सहन का अध्ययन करते हैं और उनकी आलोचना करते हैं और यह पता लगाते हैं कि यह रीति रिवाज उन में कहां से दाखिल हुए। कुछ लोग शहर से सम्बन्धित सुधार के

कुछ सुझाव पेश करते हैं। यह सब टोलियां अपने– अपने काम में व्यस्त हो जाती हैं।

अब एक व्यक्ति इस शहर में दाखिल होता है। वह पूरे शहर पर एक गहरी नज़र डालता है। वह देखता और सुनता सब कुछ है मगर व्यस्त किसी चीज़ में नहीं होता। उसके सामने महत्वपूर्ण प्रश्न यह होते हैं कि नगर का क्षेत्रफल क्या है? और वह दूसरी बातें जो पूर्व वर्णित टोलियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। उसके सामने पहला और महत्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं होता है कि यह शहर इस खूबसूरती व कारीगरी के साथ किसने बनाया और आबाद किया यहां किस की हुकूमत है? नगर वासी किस की प्रजा हैं? नगर की आबादी और सामान्य जीवन से नगर के मालिक और हाकिम का क्या और कैसा सम्बन्ध है? वह हुकूमत और प्रजा के बीच माध्यम बनता है, हुकूमत की तर्जुमानी करता है। अतएव वह तमाम ज्ञानमयी और टोलियां मिल कर भी इस व्यक्ति की जगह नहीं ले सकती, इसके बिना यह पूरा शहर एक अजायब घर और सैरगाह बन कर रह जाता है।

नबियों की सोच वैज्ञानिकों तथा मीमांसकों से बुन्यादी रूप से जुदा होती हैं। उनका काम ब्रह्माण्ड की चीज़ों के भेद और यथार्थ को खोलना व खोज निकालना नहीं। उनका असल विषय व शीर्षक ''मौजूद चीज़ों को वजूद में लाने वाली ज़ात (व्यक्तित्व) और सिफात (गुण) और उसके अहकाम (आदेश)'' हैं। कायनात की किताब के पन्ने व पृष्ठ उनके सामने भी उसी तरह खुले और फैले हुए होते हैं जिस तरह दूसरे अहले नज़र के सामने मगर उनकी नज़र कहीं अटकती उलझती नहीं उनका इस किबात के लेखक से सीधे सम्बन्ध होता है। वह ''आफाक़'' (क्षितिज) व ''अनफुस'' (आत्माओं) में उसकी खुली निशानियां देखते हैं और उसकी सत्ता को इस तरह देखते हैं कि इस ज़मीन व आसमान में उनको केवल उसी का हुक्म चलता नज़र आता है, और सिर्फ उसी के राज का जल्वा दिखाई देता है। उसका क़ानून उनको किसी कोने में भी टूटता नज़र नहीं आता। सारी ऊँचाइयां उस के सामने शर्मिन्दा दिखाई देती हैं, और तमाम ताक़तें उसके सामने असमर्थ नज़र आती हैं। हर मामले में उसका ग़ैबी हाथ काम करता नज़र आता है, जमीन व आसमान उसी के सहारे थमे हुए मालूम होते हैं। और उसका आसमानों व ज़मीन का क़य्यूम (कायम रखने वाला) होना उनके लिए अतिविश्वस्त बन जाता है।

यही ख़ुदा की वह बादशाही है जो उनको स्पष्ट दिखाई देती है जिसका ज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान और सच्चाइयों की सच्चाई है जिससे मीमांसकों के ज्ञानों को कण की भी तुलना नहीं और जिसके मुकाबले में इनकी हक़ीक़त बचकाना मालूमात से अधिक नहीं।

अनुवादः– *''और इसी तरह हम इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन की सत्ता दिखाते रहे, ताकि उनको खूब विश्वास हो जाय। (सूरः अल–अनआम 7)*

अम्बिया की प्रवृत्ति उनकी बुद्धि और उनका दिल सलामत और जकावत (बुद्धिमत्ता) का बेहतरीन नमूना होता है। उनके निरोग प्रवृत्ति की खासियत है कि उनको होश संभालते ही इस संसार के ख़ालिक (सृजक) और व्यवस्थापक की सच्ची तलब पैदा होती है। उनकी बेचैन आत्मा को उस समय तक संतोष नहीं होता जब तक कि वह उसको पा नहीं लेते। उनकी निरोग प्रकृति पहले से उनमें इसका यक़ीन व विश्वास पैदा कर देती है कि इस संसार का रचियता और मालिक और उनका मुरब्बी (दीक्षा देने वाला) कोई ज़रूर है वह ढूंढते हैं, और इस तलाश व प्रयास में भी उससे जुदा नहीं होते और कहते हैंः–

अनुवादः– *''अगर मेरे रब ने मुझे राह न दिखाई तो मैं भटके हुए लोगों में हूंगा।*

(सूरः अल–अनआम 77)

उनकी सही सूझ–बूझ और अक्ले सलीम (शुद्ध बुद्धि) का खुलासा यह है कि उनको इस दुन्या की हर नमूद (अस्तित्व) अस्थायी और हर बहार फानी (मरण शोल) होती है। उनको चांद, तारे, सूरज सब ''आफिल'' (गायब हो जाने वाले) अस्त हो जाने वाले, पतना–मुख और हारे हुए मालूम होते हैं। उनको किसी के बारे में अमर, अजय होने का धोखा नहीं होता। वह ''आफिल'' को अपनी महब्बत व इश्क के लायक नहीं समझते और इससे दिल लगाना पसन्द नहीं करते, और उनको देख कर बेइख़्तियार पुकार उठते हैंः–

अनुवादः– *''मैं गायब हो जाने वालों को पसन्द नहीं करता।*

(सूरः अल–अनआम 76)

उनको हमेशा रहने वाली जात की तलाश होती है, फिर जब वह उनको मिल जाती है तो वह इस इल्म के बाद सब्र नहीं कर सकते और पुकार कर कह देते हैंः–

अनुवादः– *''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! जिन चीजों को तुम साझीदार बनाते हो मैं उनसे बरी हूं, मैंने सबसे यक्सू (एकाग्र) हो कर अपना चेहरा उसकी ओर कर लिया है। जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया, और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं।*

(सूरः अल–अनआम 78–79)

यही है शुद्ध मन जिसमें अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की गुंजाइश नहीं होती और जो ग़ैर अल्लाह की बड़ाई के तमाम निशानों से शुद्ध होता है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यही निरोग प्रकृति, बुद्धि और यही शुद्ध मन रखते थे।

अनुवादः– *इससे पहले हम ने इब्राहीम को हिदायत और समझ दी थी, और ''हम'' उनको खूब जानते थे।*

(सूरः अल–अंबिया 51)

शेष पृष्ठ....27 पर

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी —अनुवादः अतहर हुसैन

दूसरे ख़लीफा
हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 का शासन काल

रूम की महारानी का उपहारः-

रूम के सम्राट क़ैसर से कभी—कभी पत्र व्यवहार होता था और आवश्यक प्रसंग तय करने हेतु राजदूतों का आना—जाना लगा रहता था। एक बार आपकी ओर से एक दूत जा रहा था। आपकी धर्म पत्नी उम्मे कुल्सूम रज़ि0 ने विचार किया कि रूम की महारानी को कुछ भेंट स्वरूप भेजें। अतएव उन्होंने दूत को इतर की कुछ शीशियां रानी को भेंट कर दीं। आदेशानुसार दूत जब रूम पहुंचा तो उसने अमीरुल—मोमिनीन की धर्म पत्नी का भेजा हुआ उपहार रानी की सेवा में पहुंचा दिया। जब सरकारी कार्यों से निपट कर दूत लौटने लगा तो रूम की महारानी ने उसके बदले में कुछ बहुमूल्य रत्न उसको दिए कि मदीना पहुंच कर उन्हें हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि0 की सेवा में प्रस्तुत कर दे। दूत यह उपहार ले कर मदीना पहुंचा और क़ैसर के पत्र तथा अन्य काग़ज़ों, वस्तुओं के साथ उसने ये रत्न हज़रत उमर रज़ि0 के सम्मुख रख दिये। हज़रत उमर रज़ि0 ने उन्हें देख कर पूछा ये कैसे हैं? दूत ने कहा कि आपकी धर्म पत्नी ने रूम की महारानी को कुछ इतर की शीशियां भेजी थीं जिसके बदले में उन्होंने उपहार स्वरूप यह बहुमूल्य रत्न भेजे हैं। यह ज्ञात होने के बाद हज़रत उमर रज़ि0 ने एक विराट सभा की और उस में यह घटना लोगों को सुनायी और पूछा, बताइए इस विषय में आप सज्जनों की क्या राय है? उन लोगों ने एक स्वर में कहा कि इसमें पूछने की क्या बात है? आपकी धर्म पत्नी ने रूम की महारानी को उपहार भेजा था जिसके बदले में उसने उन्हें भेंट प्रस्तुत की अतएव यह रत्न आप उन्हें दे दीजिए। परन्तु हज़रत उमर रज़ि0 ने बड़ी गम्भीर स्वर में कहा कि आप लोगों का विचार ठीक नहीं। रूम की महारानी से उम्मे कुल्सुम रज़ि0 का व्यक्तिगत कोई सम्बंध नहीं है। वह उन्हें अमीरुल मोमिनीन की धर्म पत्नी के नाते से जानती हैं, और यही कारण है कि उसके हृदय में उनका सम्मान है, और इसी महत्व तथा सम्मान हेतु उसने यह बहुमूल्य रत्न उन्हें भेजे हैं। मुसलमानों की विजय तथा उनके शौर्य, पराक्रम और वीरता के कार्यों ने ही अमीरुल मोमिनीन और उनकी बीवी को क़ैसरे रूम तथा उसकी पत्नी की दृष्टि में सम्मानित तथा प्रतिष्ठित किया है। इसलिए यह उपहार वास्तव में उम्मे कुल्सुम के लिए नहीं आया है बल्कि अमीरुल—मोमिनीन की

पत्नी के लिए, और अमीरुल मोमिनीन का सम्मान मोमिनीन की वजह से है। अतः वास्तव में यह जवाहरात तमाम मुसलमानों की सम्पत्ति हैं और यह भी सोचने की बात है कि दूत सरकारी काम से गया था जिसकी यात्रा का खर्च राजकोष से दिया गया, इसलिए इन रत्नों को राजकोष में जमा कर दिया जाय और उम्मे कुल्सुम को उनके इतर की शीशियों का दाम अदा कर दिया जाये।

पुत्र के ऊँटों का निर्णयः-

एक बार हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि0 ने एक ऊँट खरीदा। ख़रीदने के बाद उसे ऊँटों के सरकारी फ़ार्म में चरने के लिए छोड़ दिया गया। कुछ दिनों में जब वह मोटा हो गया तो उन्होंने विचार किया कि उसे बेच डालें। इसी विचार से एक दिन उसे मंडी भेजा। अकस्मात् जिस समय ऊँट बिक रहा था, हज़रत उमर रज़ि0 उधर जा निकले, देखा कि एक मोटा–ताज़ा ऊँट बिक रहा है। पूछा कि यह किस का ऊँट है? उन लोगों ने उत्तर दिया कि सरकार, यह ऊँट आपके सुपुत्र अब्दुल्लाह रज़ि0 का है। यह सुन कर आपने अब्दुल्लाह रज़ि0 से पूछा कि यह ऊँट तो खूब मोटा है। तुम ने क्या खिलाया कि यह इतना मोटा हो गया? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 ने कहा, ''मैंने ख़रीद कर इसे सरकारी फ़ार्म में छोड़ दिया था, यह वही चारा खाता था। अब तनिक मोटा हो गया तो इसे बेचने के लिए मण्डी लाया हूं।'' सुपुत्र के ये वाक्य सुन कर आपने कहा, तुम्हारा यह तरीक़ा ठीक न था। चूंकि तुम्हारा यह ऊँट सरकारी फार्म में चर कर इतना मोटा हुआ है अतः लाभ के अधिकारी तुम नहीं बल्कि सरकार है।'' यह कह कर आपने हज़रत अब्दुल्लाह को उतने दाम दे दिये जितने में उन्होंने ऊँट खरीदा था और शेष राशि जो लाभ के रूप में प्राप्त हुई ख़जाने में जमा कर दी।

एक और घटनाः-

इसी प्रकार की एक और घटना इस अवसर पर उल्लेखनीय है। एक बार किसी ज़रूरत से आपके सुपुत्र उबैदुल्लाह रज़ि0 इराक़ गए हुए थे। वहां इराक़ के गवर्नर से भी भेंट हुई। जब अपना कार्य समाप्त करने के बाद मदीना मुनव्वरा वापस होने लगे तो गवर्नर ने उनसे कहा कि मुझे अमीरुल–मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि0 की सेवा में कुछ सरकारी रूपया भेजना है। अब आप जा ही रहे हैं तो किसी और व्यक्ति को मदीना क्यों भेजूं। आप यह रूपया लेते जायें और अमीरुल मोमिनीन की सेवा में पहुंचा दें। मेरा तो ऐसा विचार है कि आप इस धन से कुछ व्यापारिक सामग्री मोल ले लें और मदीना पहुंच कर यह सामग्री बेच कर मूल राशि राजकोष में दाखिल कर दें और लाभ आप स्वयं ले लें। प्रत्यक्ष रूप से इस परामर्श में कोई आपत्ति न थी। हज़रत उबैदुल्लाह ने धन लेकर व्यापारिक सामग्री मोल ले ली और मदीना पहुंच कर वह सामान बेच कर लाभ स्वयं ले कर मूल राशि

शेष पृष्ठ....27 पर

–पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

ज़मा–नए–माबाद के बुजुर्गाने दीन का इश्क़ व शगफ नमाज़ के साथः–

साबित बुनानी मशहूर मुहद्दिस हैं वह दुआ फरमाया करते थे कि ऐ अल्लाह अगर किसी को कब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त हो सकती है तो मुझे भी हो जाए।

इमामे रब्बानी हज़रत मुजद्दिदे अल्फे सानी रह0 के मशहूर खलीफा ख़्वाजा अब्दुल वाहिद लाहौरी से मन्कूल है कि एक दिन फरमाया ''क्या जन्नत में नमाज़ होगी?''।

किसी ने अर्ज़ किया कि हज़रत जन्नत तो दारुल जज़ा है न कि दारुल अमल, फिर वहां क्यों नमाज़ होने लगी, यह सुन कर बड़े दर्द के साथ और रोते हुए फरमाया ''फिर बगैर नमाज़ के वहां कैसे गुज़रेगी''।

अहलुल्लाह के तज़किरों में नमाज़ के साथ खासाने खुदा के इश्क़ व शगफ के बड़े बड़े असर अंगेज़ और सबक आमोज़ वाकिआ़त कसरत से मिलते हैं।

मख्दूमुना हज़रत मौलाना मुहम्मद जकरीया मद्दजिल्लुहू (शैखुल हदीस मुजाहिरे उलूम सहारनपुर) ने अपने रिसाला ''फजाइले नमाज़'' में भी इस क़बील के बहुत से वाकिआ़त नक़्ल किए हैं, अहले शौक़ वहां मुताला फरमाएं, अब हम इस सिलसिले को यहीं खत्म करते हैं, जिन्दा और बेदार दिल रखने वाले हज़रात के लिए मज़कू–रए–सद्र चन्द वाकिआ़त ही काफी हैं।

''कुर्रतु ऐनी फिस्सलाति'' वाली कैफीयत का राज़ः–

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुर्रतु ऐनी फिस्सलाति वाली निसबत से हिस्सा पाने वाले अस्हाबे एहसान और मुक़र्रबीन को नमाज़ में जो कैफीयत हासिल होती है अगरचे वह तहरीर व बयान के दाइरे से बाहर ही की चीजें हैं और उनका सहीह इदराक भी सिर्फ उन्हीं खुश नसीबों का हिस्सा है जो खुद उस से बहरायाब हों और इस बाब में आरिफीन का यह मकूला बिला शुब्हा सौ फीसद सहीह है कि ''जिसने उसको नहीं चखा वह उस का ज़ाइक़ा भी नहीं जानता''।

ताहम दूसरों की तशवीक़ व तरगीब ही के लिए बाज़ अकाबिर उरफा ने इस बारे में जो इशारात किए हैं जी चाहता है कि इस मक़ाले को उनके ज़िक्र से भी खाली न रखा जाए, क्या अजब कि किसी खुश नसीब के दिल में इशारात शौक़ की आग भड़का दें और सिदक़े तलब व हुस्ने नीयत की बरकत से अल्लाह तआला यह नेमत उस को भी अता फरमा दे।

इमामे रब्बानी सय्यिदुना शैख अहमद सर हिन्दी मुजद्दिदे अल्फे सानी यकीनन

उन उरफाए कामलीन में से हैं जिन को अल्लाह तआला ने इस दौलते उज़मा (यानी मेरी आंखों की ढन्ढक नमाज़ में है) से बह–रए–वाफिर अता फरमाया था, हज़रत मम्दूह ने अपने चन्द तालीमी व तरबीयती मकातीब में, नमाज़ में हासिल होने वाली कैफियात और वारिदात के मुतअल्लिक़ बड़े बड़े शौक़ अंगेज़ इशारात फरमाए हैं, उन्हीं के चन्द इक्तिबासात का यहां दर्ज करना हमारी गरज़ के लिए काफी है।

जिल्दे अव्वल के मक्तूब नं0 137 में इरक़ाम फरमाते हैं तर्जुमा– ''मालूम होना चाहिए कि दुन्या में नमाज़ का दर्जा वही है जो आखिरत में दीदारे इलाही का है, इस दुन्या में बन्दे को मौला का इन्तिहाई कुर्ब नमाज़ ही में हासिल होता है, और आखिरत में इन्तिहाई कुर्ब दीदार के वक़्त नसीब होगा''।

नीज़ इसी जिल्द के मक़्तूब नं0 261 में रक़म फरमाते हैं, तर्जुमा– ''नमाज़ ही बीमार से इश्क़ व महब्बत का चैन व आराम है, हुजूर के इरशाद ''या बिलाल मुझे राहत पहुंचाओ'' में इसी तरफ इशारा है, और ''मेरी आंखों की ढन्ढक नमाज़ में है'' में भी इसी मुद्दअ़ का इज़्हार है, जो नमाज़ पढ़ने वाला नमाज़ की हक़ीक़त से आशना है वह नमाज़ अदा करते वक़्त गोया इस दुन्या के दाइरे से निकल कर आलमे आखिरत में पहुंच जाता है, फिर उस को इस दौलते उज़मा में से कुछ हिस्सा मिल जाता है जो आखिरत के साथ मख्सूस है, यानी ''अस्ल बेशाइबा जिल्लीयत'' का एक गोना विसाल व लिक़ा मुयस्सर हो जाता है''।

नीज़ इसी जिल्द के मक्तूब नं0 305 में फरमाते हैं, तर्जुमा– ''मर्दे कामिल नमाज़ के अन्दर क़िराअत और तस्बीहात व तक्बीरात कहते वक़्त अपनी ज़बान को शज–रए–मूसवी के मानिन्द पाता है और अपने आज़ा व कुवा को आलात व वसाइत के सिवा कुछ नहीं जानता (जो बिल्कुल्लीया किसी और ही के इरादा व इख्तियार के ताबे हैं) और कभी उसको महसूस होता है कि नमाज़ अदा करते वक़्त उस का बातिन और उसकी हक़ीक़त उसके जाहिर और उसकी सूरत से बिल्कुल मुन्क़ता हो कर आलमे गैब से वाबस्ता हो गया है और गैब के साथ उसको एक मज्हूलुल कैफीयत निस्बत हासिल हो गई और जब नमाज़ से फारिग होता है तो गोया फिर से इस दुन्या में वापस आता है''।

जैसा कि हम शुरुअ ही में एतिराफ कर चुके हैं यह कैफीयात बेशक बयान करने लिखने की नहीं हैं ताहम हज़रत इमाम रब्बानी रह0 के इन इशारात से ''मेरी आंखों की ढन्ढक नमाज़ में'' और ''या बिलाल मुझे राहत पहुंचाओ'' के इज्माल की कुछ न कुछ तश्रीह और ''नमाज़ मोमिनों की मेराज है'' की हक़ीक़त की एक दर्जा में तौजीह जरूर हो जाती है, और आप

के इन अल्फाज़ व इबारात ही के पर्दे से इन कैफीयात व वारदात की कुछ न कुछ झलक नज़र आ ही जाती है, खुश नसीब हैं वह जो हज़रत मुजद्दिद रह0 के इन इशारों ही की रोशनी में इस मुक़ाम की तरफ बढ़ने की, और अपनी नमाज़ों को ''मोमिनों की मेराज'' के दर्जे तक पहुंचाने की कोशिश करें, अल्लाह तआला का वादा है कि जो बन्दा मेरी तरफ एक बालिश्त बढेगा मेरी रहमत एक हाथ बराबर बढ़ कर उस का इस्तिक़बाल करेगी।

इस मक़ाले को खत्म करते हुए नाज़रीन को गलत फहमी से बचाने के लिए फिर साफ–साफ यह अर्ज कर देना जरूरी मालूम होता है कि खासाने खुदा के इन अहवाल व कैफीयात के जिक्र और उन के आरिफाना इरशादात के नक़्ल करने से राकिमुस्सुतूर के बारे में किसी को गलत फहमी न होनी चाहिए, यह वाकिआ है जिसमें किसी रस्मी इन्किसार और तसन्नो को मुत्लक़ दख्ल नहीं कि यह सियाहकार इस बारे में बड़ा महरूम और बे नसीब है और उस के पल्ले में सिवा हसरत और आरजू के और कुछ नहीं है, हां इस दौलत के बहरा मन्दों से उसे महब्बत है और बेशक उन के अहवाल व मुक़ामात के तज़्किरे और उनके इरशादात की नक़्ल व तकरार में इसे खास लज़्ज़त हासिल होती है और यह भी इस रूसियाह पर रब्बे करीम का खासुलखास एहसान है।

अपनी महरूमी और हसरत नसीबी के इस एहसास व इज़्आ़न के बावजूद अपनी हैसीयत से बहुत ऊँची इस तरह की बातों के लिखने की जुरअत सिर्फ इस उम्मीद पर कर ली जाती है कि शायद किसी नेक तीनत और सईदुल फितरत बन–दए–खुदा की नज़र से यह तहरीर गुज़रे और उसके सालेह क़ल्ब में तलबे सादिक़ पैदा हो जाए और यह नेमते उज़्मा उस को हासिल हो जाए और फिर अल्लाह तआला अपने करीमाना कानून ''जिस ने सिकी नेकी की तरफ किसी की रहनुमाई की तो उसको उस नेकी के करने वाले ही के बराबर अज्र मिलेगा'' के मुताबिक इस महरूम व हसरत नसीब को भी इस के अज्रे अज़ीम से नवाज़े।

फार्सी शाइर कहता है, अनुवाद– ''हम तुम्हें मतलूबा खज़ाने का निशान बता रहे हैं हम तो उस खज़ाने तक न पहुंच सके शायद तुम पहुंच जाओ''।

और कुर्आन में आया है, अनुवादः ''सो आप बशारत दे दीजिए मेरे उन बन्दों को जो इस कलाम कुर्आन को कान लगा कर सुनते हैं, फिर इस की अच्छी अच्छी बातों पर चलते हैं, यही हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत की और यही हैं जो अहले अ़क़्ल है''।

(जुमरः 17–18)

जारी.....

प्रदूषित पानी से मानव-जीवन को ख़तरा

—रऊफ़ आज़मी

अल्लाह तआला ने इस भूमंडल की प्रबंध–व्यवस्था को अत्यंत संतुलन के साथ इसलिए स्थापित किया है, ताकि मानव जीवन को किसी भी तरह का ख़तरा पैदा न हो। ब्रह्माण्ड की हर चीज़ में पूर्ण संतुलन है। सूरज से ज़मीन की दूरी में अगर कमीबेशी होती, तो ज़मीन पर जीवन की कल्पना संभव न होती। ज़मीन अपनी धुरी पर 24 घंटे में एक चक्कर लगाती है। अगर यह समय 24 घंटे के बजाय 30 हो जाए, तो इतनी तेज हवाएं चलें कि लोगों को ईश्वरीय प्रकोप का भय सताने लगे। इसी तरह अगर यह समय घट कर 21 घंटे हो जाए, तो वनस्पतियों के लिए ख़तरा पैदा हो जाता है। जिस तरह ब्रह्माण्ड की सारी व्यवस्था में वास्तविक संतुलन है, उसी तरह पर्यावरण में भी भरपूर संतुलन है। वातावरण, हवा और पानी प्रकृति के दो अनमोल उपहार हैं। प्रदूषण से पाक हवा–पानी और स्वच्छ पर्यावरण अल्लाह तआला की बड़ी नेमत है।

आश्चर्य है कि जिस हवा पानी की पवित्रता और वातावरण की सफ़ाई पर मानव जीवन की निर्भरता है, इन्सान इस हवा–पानी और वातावरण को प्रदूषित करके मुसीबतों को आमंत्रित करता है। इस वक़्त पर्यावरणीय प्रदूषण को लेकर सारी दुन्या परेशान है।

भारत ही नही बल्कि दुन्या के कई देशों में पानी की समस्या बनी हुई है। लोग साफ़–सुथरा पीने योग्य पानी से वंचित हैं। विशषज्ञों के अनुसार दक्षिणी अफ़्रीक़ा का शहर केपटाउन दुन्या का पहला बड़ा शहर बन गया है, जहां इस आधुनिक दौर में भी पीने के पानी की कमी बनी हुई है। यह वह समस्या है, जिसकी तरफ़ विशेषज्ञ एक लंबे समय से ध्यान दिला रहे थे। बज़ाहिर तो पानी दुन्या के 70 प्रतिशत भाग पर फैला हुआ है, लेकिन इसका केवल 3 प्रतिशत ही पीने योग्य है, जो आबादी बढ़ने, प्रदूषण और दूसरे कारणों के आधार पर नाकाफ़ी साबित हो रहा है। दुन्या में कम से कम एक अरब लोग पानी की समस्या से जूझ रहे हैं और 2.7 अरब इन्सान ऐसे है, जिन्हें साल के कम से कम एक महीने में पानी की कमी का सामना करना पड़ता है।

2014 ई0 में दुन्या के पांच सौ बड़े शहरों का सर्वे किया गया, जिससे मालूम हुआ कि हर चार में से एक शहर पानी के दबाव से दोचार है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार यह वह सूरतेहाल है, जब पानी की सालाना मात्रा 1700 क्यूसिक मीटर (17 लाख लीटर) प्रति व्यक्ति से कम हो जाए। (WHO) वैश्विक स्वास्थ्य संस्था और संयुक्त राष्ट्र की भविष्यवाणी के अनुसार 2030 की दुन्या में ताज़ा पानी की मांग 40 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी, जिसके कारण पर्यावरणीय परिवर्तन, आबादी में वृद्धि और इन्सानी व्यवहार में बदलाव है इस सारे सूरतेहाल में केपटाउन आइस वर्ग की

चोटी की भांति है, जिसका केवल एक हिस्सा पानी से बाहर और नौ हिस्से अन्दर होते हैं। नीचे दुन्या के कुछ ऐसे मुख्य शहरों की सूरतेहाल बयान की जा रही है, जिसके बारे में अंदेशा है कि वह केपटाउन की तरह पानी के अभाव के खतरे से दो–चार हैं।

भारत के बंगलौर शहर और आसपास के क्षेत्रों की झीलें बुरी तरह से प्रदूषित हो रही हैं। इस भारतीय शहर का टेक्नॉलोजी का केन्द्र बनने के बाद वहां की आबादी में बेतहाशा वृद्धि हुई है, जिसका प्रभाव विवशतापूर्वक पानी की उपलब्धता और निकासी के प्रबंध पर पड़ा है। यह बात भी है कि शहर में पानी की सप्लाई का प्रबंध इस तरह ख़राब है कि स्थानीय हुकूमत के अनुसार आधा स्वच्छ पानी व्यर्थ चला जाता है। केवल कर्नाटक के क्षेत्र ही में नहीं, बल्कि आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, उत्तराखंड जैसे राज्यों में जनता साफ़–सुथरे पानी से वंचित है।

वैश्विक स्वास्थ्य संस्था के अनुसार भारत में प्राकृतिक मौत से मरने वालों की संख्या का अनुपात बहुत कम है। हमारे देश में प्रदूषित पानी, प्रदूषित खाद्य–पदार्थ और साफ़–सुथरा वातावरण न मिलने के कारण करने वालों की संख्या लगभग 60 प्रतिशत है, जो कि चिंता का एक विषय है। प्रदूषित पानी और प्रदूषित भोजन के इस्तेमाल से मरने वालों की संख्या में दिन–प्रतिदिन वृद्धि ही होती जा रही है, वहीं पर सफ़ाई व सुथराई न होने के कारण हज़ारों की संख्या में लोग विभिन्न बीमारियों का शिकार हो कर मौत के गाल में समा रहे हैं, जिससे हमारे देश की सरकारों की कारकर्दगी पर सवालिया निशान लगे हुए हैं।

मिस्र का 97 प्रतिशत ताज़ा पानी नील नदी से आता है। क़ाहिरा शहर के अन्दर से बहने वाली नील नदी ने वैसे तो हज़ारों सालों से सभ्यताओं को सिंचित किया है, लेकिन अब इस महान नदी को बहुत ज़ियादा दबाव बर्दाश्त करना पड़ रहा है। मिस्र नदी के स्वच्छ पानी का 97 प्रतिशत हिस्सा प्रदान करता है, लेकिन अब यह इन्सानी बस्तियों और औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाले गंदे पानी से प्रदूषित होता चला जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार मिस्र में प्रदूषित पानी से संबंधित बीमारियों से बड़े पैमाने पर मौतें हो रही हैं और 2025 ई0 तक वहां पानी की गंभीर कमी होने का अंदेशा है।

रूस में पानी की कमी नहीं है, लेकिन यह पानी प्रदूषित होता जा रहा है। मास्को, रूस में सामूहिक रूप से ताज़ा पानी का बहुत बड़ा भंडार पाया जाता है, लेकिन सोवियत दौर में की जाने वाली कृषि संबंधित विस्तारण के कारण इसे भी प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है। मास्को में 70 प्रतिशत पानी ज़मीन की सतह से प्राप्त होता है, जो ज़ियादा आसानी से प्रदूषित हो जाता है। स्थानीय संस्थाएं स्वीकार करती हैं कि देश का 35 से 60

प्रतिशत पानी स्वास्थ्य रक्षा की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता।

लंदन में बड़े पैमाने पर पानी की बर्बादी होती है। लंदन बहुत से लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि लंदन में भी पानी की फ़राहमी दबाव का शिकार है। आमतौर पर समझा जाता है कि वहां बहुत वर्षा होती है, लेकिन वास्वत में लंदन में वर्षा की मात्रा पेरिस और न्यूयार्क की तुलना में बहुत कम है और यहां का 80 प्रतिशत पानी नदियों से आता है। ग्रेटर लंदन अथार्टी के अनुसार 2025 तक शहर में पानी कम पड़ना शुरु हो जाएगा और यह समस्या 2040 ई0 तक, गंभीर रूप धारण कर लेगी। लगता है कि लंदन में रबड़ के पाइपों के इस्तेमाल पर पाबंदी लगने वाली है।

प्रदूषण के हवाले से जहां तक इस्लामी दृष्टिकोण की बात है तो वह बिल्कुल स्पष्ट है। इस्लाम साफ़ सुथरा और पवित्र धर्म है, पाकी को आधा ईमान ठहराता है। हदीसों में घरों के सेहनों तक को पाक साफ़ रखने की ताकीद की गयी है। जल संचयों में गंदगी फैला कर उन्हें प्रदूषित करने से रोका गया है। इस्लाम में वृक्षारोपण की प्रेरणा दी गयी है। नबी करीम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया ''जो कोई मुसलमान पेड़ लगाता है या खेती करता है और उससे कोई इन्सान, परिंदा या जानवर खाता है, तो यह लगाने वाले के लिए हिस्सा है।'' (बुख़ारी)

मशहूर इमाम औज़ाई का कथन है कि पेड़ों का काटना बहुत बड़ा गुनाह है, क्योंकि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने किसी पेड़ को काटने विशेष रूप से फलदार, और किसी इमारत को बर्बाद करने से मना किया कि आपके बाद मुसलमानों ने इस पर अमल किया। (सुनन तिर्मिज़ी) पवित्र कुर्आन साफ़ कहता है कि खुश्की व तरी में फ़साद व बिगाड़ वास्तव में इन्सान की करतूतों की वजह से आता है। कुर्आन, ज़मीन में फ़साद पैदा करने से रोकता है, जिससे मानव–स्वास्थ्य को ख़तरा होने का डर पैदा होता हो।

भारत के लिए यह बात बहुत ज़ियादा चिंतनीय है कि प्रदूषण के कारण सबसे ज़ियादा मृत्यु यहीं पर हुई। सिर्फ़ एक साल 2015 ई में 52 लाख लोग प्रदूषण की भेंट चढ़ गये। प्रदूषण से संबंधित ब्रिटेन की स्वास्थ्य पत्रिका की हालिया रिपोर्ट भारत के लिए सोचनीय है। भारत प्रदूषण से प्रभावित होने वाले देशों की सूची में पहले नम्बर पर है। प्रदूषण से संबंधित ताजा रिपोर्ट भी उस वक़्त सामने आयी, जब देश में दीपावली का त्योहार मनाया जाने वाला था। पर्यावरण प्रदूषण के पेशेनज़र सुप्रीम कोर्ट ने पटाखों के क्रय–विक्रय पर पाबंदी लागू की थी, इसके बावजूद दिल्ली और देश भर में पटाखे छोड़ने में कोई कमी नहीं हुई।

स्वच्छ भारत का नारा लगा कर कुछ सांकेतिक काम कर लेने से प्रदूषण से मुक्ति संभव नहीं, बल्कि प्रदूषण से संबंधित जानकारी

से जन–समुदाय को जागरूक करने की नितांत ज़रूरत है, तभी प्रदूषण से हम सुरक्षित रह सकते हैं।

(हिन्दी मासिक कान्ति जून 2018 से ग्रहीत)

❖❖❖

शहीद की जिन्दगी.....

नही किया मगर उसकी जान ली गई तो वह शहीद मरा उसको शहादत का कौन सा दर्जा मिला यह अल्लाह ही को मालूम है, और जिस ने किसी ईमान वाले को जान बूझ कर क़त्ल किया था वह सदैव जहन्नम में जलेगा। (अन्निसाः93)

यह जो बम विस्फोट कर के आत्म हत्या करते हैं रिवायात से यही सिद्ध होता है कि लोगों की अकारण जान लेने वाला और आत्म हत्या करने वाला जहन्नम में जलेगा।

निःसंदेह शहादत बड़ी दौलत है परन्तु इस का यह मतलब नहीं है कि किसी की शहादत पर खुशी मनाई जाए कि जब हमारे आदमी को ऊँचा पुरस्कार मिला है तो हम खुशी मनाएं, नहीं उसको जो ज़ाहरी कष्ट पहुंचा है और उसके परिवारजनों को जो हानि हुई है उस पर दुखी होना प्राकृतिक है, स्वयं प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बिअरे मऊना के शहीदों पर और हजरत हम्ज़ा की शहादत पर दुख हुआ था जैसा कि रिवायात से सिद्ध है, साथ ही किसी की शहादत पर नौहा व मातम की रस्म अदा करना भी वर्जित है कि रिवायात से केवल तीन दिन तक गम मनाने का सुबूत है बाद में गम मना नहीं है परन्तु गमी की रस्म प्रचलित करना मना है।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा .....

हज़रत मूसा की क़ौम थी और पैग़म्बर सर्वथा कृपाशील होते हैं, इसलिए उनको सज़ा मिलने पर हज़रत मूसा को दुख हुआ तो अल्लाह ने कहा कि नाफ़रमानों पर दुखी मत हो।

6. यह हज़रत आदम के दो बोटों की कहानी है, क़ाबील किसान था उसमें घमण्ड था और हाबील चरवाहा था और उसमें विनम्रता थी, दोनों ने कुर्बानी पेश की, हाबील की कुर्बानी निष्ठा से परिपूर्ण थी तो स्वीकार हो गई, और स्वीकार होने की निशानी उस समय होती थी कि आग आकर कुर्बानी की चीज़ को खा लेती थी बस काबील क्रोध से भर गया और उसने अपने भाई को मार डाला फिर परेशान हुआ कि लाश का क्या करे, अल्लाह ने कौवा भेजा जो उसको व्यवहारिक शिक्षा दे गया और अपनी वास्तविकता भी उसकी समझ में आ गई।

7. यानी अगर तुमने मुझे क़त्ल किया तो पीड़ित होने के कारण मेरे पाप तो माफ़ हो जाने की आशा है बल्कि मेरे क़त्ल के कारण कुछ मेरे पाप भी तुम पर लद जाएं तो कोई अनोखी बात न होगी बस दोनों के पापों का नुक़सान तुम्हें ही होगा।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आपके प्रश्नों के उत्तर?

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः आशूरे के रोज़े का क्या हुक्म है?

उत्तरः आशूरा यानी 10 मुहर्रम का रोज़ा मस्नून (सुन्नत) है, यह रोज़ा रमज़ान के रोज़े फर्ज़ होने से पहले फर्ज़ था, जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हुए तो आशूरा का रोज़ा मस्नून हो गया चूंकि आशूरे का रोज़ा मदीने के यहूदी भी रखते थे इसलिए अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आइन्दा मैं 10 मुहर्रम के साथ एक दिन मिला कर रोज़ा रखा करूंगा ताकि यहूदियों के रोज़े और हमारे रोज़े में फर्क हो जाए, लिहाजा मुसलमान 10 मुहर्रम के साथ 9 या 11 मुहर्रम का रोज़ा मिला कर रखने लगे, और उलमा ने लिखा कि अकेले 10 मुहर्रम का रोज़ा रखना मकरूह है लेकिन इस वक़्त के उलमा लिखते हैं कि यहूदी कलण्डर में न मुहर्रम है न आशूरा वह आशूरा का रोज़ा नहीं रखते हैं बल्कि उसे जानते भी नहीं हैं लिहाजा अब सिर्फ 10 मुहर्रम को रोज़ा रखना मकरूह न होगा फिर भी अगर कोई एक दिन बढ़ा के रोज़ा रखेगा तो ज़ियादा सवाब पाएगा। सहा—बए—किराम 10 मुहर्रम को एहतिमाम के साथ रोज़ा रखते थे हम को भी चाहिए कि 10 मुहर्रम का मस्नून रोज़ा रख लिया करें।

प्रश्नः ताज़िया दारी का क्या हुक्म है?

उत्तरः मुरव्वजा (प्रचलित) ताज़िया दारी तमाम उलमा के नज़दीक नाजाइज़ है, बाज़ सूरतों में बिदअ़ते सय्यिअ़ः तो बाज़ सूरतों में तो खुला हुआ शिर्क है लेकिन ताज़ियादारी आम तौर से दीन से नावाकिफ मुसलमानों में मुरव्वज है यह शीआ़ हज़रात की देन है हम को उन पर तन्क़ीद करने का हक़ नहीं कि उन का मज़हब अहले सुन्नत वल जमाअत से अलग मुस्तकिल मज़हब है लेकिन हमारे जो सुन्नी भाई उनके प्रोपेगण्डे से मुतअस्सिर हो कर उन का अमल अपनाने लगे हैं उनको हिकमत से समझा बुझा कर इस गुनाह से निकालना चाहिए।

प्रश्नः जो सुन्नी मुसलमान ताजिया दारी करते हैं वह उससे बड़ा जज़्बाती तअल्लुक रखते हैं उनको किस तरह समझाया जाए?

उत्तरः यह काम बड़ी मेहनत और बड़ी हिकमत चाहता है। सबसे पहले तो उनको यह बताया जाए कि ताज़ियादारी देवबन्दी उलमा ही नहीं बल्कि बरेलवी उलमा के नज़दीक भी नाज़ाइज़ है मौलाना अहमद रज़ा खां और उनके बेटे मौलाना मुस्तफा रज़ा खां ने भी ताज़ियादारी को नाजाइज़ लिखा है, बरेलवी मसलक की मशहूर किताब बहारे शरीअत में भी ताज़ियादारी को नाजाइज़ लिखा गया है, ताजियादार हज़रात, हुसैन रज़ि0 से जज़्बाती तअल्लुक रखते हैं उनके इस जज़्बे की कद्र करते हुए सब से पहले

हज़रत हुसैन की सहीह सीरत बयान करना चाहिए, उनके बेटे हज़रत ज़ैनुल आबदीन और पोते हज़रत जैद की सीरत बयान करना चाहिए। हज़रत जैद भी शहीद हुए हैं लेकिन हज़रत हुसैन की महब्बत में न हज़रत जैनुल आबदीन ने ताज़ियादारी की न हज़रत जैद ने, यह ढोल, ताशा, झांझ दीन में कहां से आ गए फिर उनके सामने हज़रत हसन, हज़रत अली, हज़रत उस्मान, हज़रत उमर और हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की सीरतें बयान करनी चाहिए और सब के दरजात बताने चाहिए और अहले सुनन्त और शीओं के फर्क को अच्छे ढंग से समझाना चाहिए, हज़रत उमर की शहादत का बयान भी लाना चाहिए वह 27 ज़िल्हिज्ज को नमाज़ की हालत में जख्मी किए गए थे और पहली मुहर्रम को वफात पाई थी, हज़रत उमर रज़ि0 का दर्जा उम्मत में दूसरा है मगर ताज़ियादार सुन्नी उन की शहादत के बारे में कुछ नहीं जानते, 18 जिल्हिज्ज को हज़रत उस्मान को शहीद किया गया ऐसी मजलूमाना शहादत शायद ही किसी की हुई हो उनकी शहादत को भी ताज़ियादार सुन्नी नहीं जानते, हज़रत अली की शहादत रमज़ान सन 40 हिजरी में हुई, हज़रत हसन को जह्र दे कर शहीद किया गया इन में से किसी की शहादत को सुन्नी ताज़ियादार शायद ही जानते हों, हज़रत हुसैन की महब्बत में ताज़ियादारी सिर्फ शीओं का प्रोपैगण्डा है। हज़रत हुसैन रज़ि0 से महब्बत है तो उनके नाना की शरीअत पर चलो। इस तरह समझाया जाए तो हो सकता है कि हमारे सुन्नी भाईयों की गलतफहमी दूर हो और वह ताज़ियादारी से बाज़ आएं।

प्रश्नः एक शख्स ने बयान किया कि उस के कोई औलाद न होती थी किसी के कहने से उसने मन्नत मानी कि अगर उसके यहां बच्चा पैदा होगा तो वह ताज़िया रखेगा, उसी साल उसके यहां बच्चा पैदा हुआ और वह उसी साल से ताज़ियादार हो गया उसको किस तरह समझाया जाए?

उत्तरः ताज़ियादारी की यही शक्ल शिर्क की है इसी तरह देखा गया है कि ताज़िया के सामने हल्वा, मिठाई और शरबत वगैरा रखते हैं फिर उसे बरकत के तौर पर खाते पीते हैं, ताज़िया के गिर्द लोबान सुलगाते हैं चरागां करते हैं और रात जागते हैं यह वह आमाल हैं जो शिर्क तक पहुंचा देते हैं, मज़कूरा शक्ल को बड़ी हिकमत से इस्लामी अक़ीदा समझाना चाहिए औलाद देना और न देना अल्लाह का काम है उसको ताजिये की तरफ मन्सूब करना शिर्क है उसके लिए अल्लाह की तरफ से बच्चा पैदा होने का फैसला हो चुका था उसी वक़्त शैतान ने उससे ताज़िये की मन्नत मनवा दी और उसको शिर्क के जाल में फंसा दिया अल्लाह उसे हिदायत दे। कोशिश करना अपना काम है हिदायत देना अल्लाह का काम है उसको यह वाकिआ भी सुना देना चाहिए कि एक शख्स कैंसर में मुबतला हुआ उसने मन्नत मानी कि अगर मैं अच्छा हो गया तो

ताज़िया रखूंगा मुहर्रम करीब था उसने ताज़िया रखना शुरुअ़ भी कर दिया मगर वह बच न सका उसका इन्तिक़ाल हो गया इस तरह के और कई वाकिआ़त मेरे इल्म में हैं उसको समझाना चाहिए कि ज़िन्दगी और मौत मरज व शिफा औलाद देना न देना अल्लाह के इख्तियार में है, ताज़िया या किसी भी गैरुल्लाह में ऐसे इख्तियारात मानना शिर्क है अल्लाह तआला हम सब को शिर्क से बचाये और तौहीद पर जमाये रखे, आमीन।

प्रश्नः हज़रत हसन रज़ि0 की वफात कब, कहां और कैसे हुई?

उत्तरः हज़रत हसन रज़ि0 की वफात बाज उलमा के नज़दीक 5 रबीउल अव्वल सन् 50 हिजरी है। आप की वफात मदीना मुनव्वरा में हुई और आप की तदफीन जन्नतुल बकीअ़ में हुई, यह सहीह है कि आपको जह्र दिया गया और इस तरह आप शहीद हुए, लेकिन यह पता न चल सका कि आपको जह्र किस ने दिया और किस ने दिलवाया, आखिर वक़्त आप के छोटे भाई हज़रत हुसैन ने बहुत पूछा कि जिस पर शक हो बताइये हम उस से बदला लें लेकिन आपने किसी का नाम नहीं लिया यह जो बाज़ लोगों ने उनकी एक बीवी को नामज़द किया है व महज गुमान है और जह्र दिलवाने के लिए हज़रत मुआविया का जो नाम लिया है वह सिर्फ दुश्मनी में गढ़ी कहानी है। हज़रत हसन रज़ि0 का बड़ा दर्जा है वह सहाबी हैं शहीद हैं, जन्नती हैं हमारे बुजुर्ग हैं अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह अपने रब से राज़ी हुए।

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी .....

अनुवादः– *''नूह ही के रास्ते पर चलने वालों में इब्राहीम भी थे (याद करो), जब कि वह अपने रब के समक्ष साफ–सुथरा दिल ले कर आए फिर उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, तुम किस चीज़ की पूजा करते हो? क्या अल्लाह को छोड़ कर मनगढ़न्त मअ़बूदों (उपास्यों) को चाह रहे हो? तो तुम ने संसार के रब के बारे में क्या गुमान (समझ) कर रखा है।*

(सूरः अस्साफफात 83–87)

..... जारी.....

आदर्श शासक.....

हज़रत उमर रज़ि0 की सेवा में प्रस्तुत कर दी और कहा कि इराक़ के गवर्नर की ओर से राजकोष में जमा कर दिया जाये। वार्तालाप के बीच उन्होंने इस घटना का भी उल्लेख किया कि किस प्रकार व्यापार द्वारा लाभ प्राप्त किया। हज़रत उमर रज़ि0 ने यह सुन कर पूछा, ''क्या इराक़ के गवर्नर ने केवल तुम्हारे ही साथ ऐसा व्यवहार किया या तुम्हारे अन्य साथियों को भी इस प्रकार से लाभ उठाने का अवसर दिया?'' हज़रत उबैदुल्लाह रज़ि0 ने उत्तर दिया, ''जी नहीं, उन्होंने तो और किसी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया, बल्कि मेरे ही ऊपर ऐसी कृपा की है।'' हज़रत उमर रज़ि0 ने यह उत्तर सुन कर कहा, कि केवल तुम्हारे ही साथ इस प्रकार की विशेषता बरतने का कोई कारण नहीं। अतः आदेश दिया कि सरकारी धन से चूंकि यह लाभ कमाया गया है इसलिए यह लाभ भी राजकोष में जमा किया जाये।

❖❖❖

शर्मो, हया व पर्दाः भारतीय सभ्यता

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी

बेहयाई मत करो, मानस में देख लो ।
लक्ष्मण का सलीक़ा, तो मानस में देख लो ॥

पैर के ज़ेवर को, पहचाना लखन ने ।
निगाह नीची रखना मानस में देख लो ॥

चेहरे का ज़ेवर देखा, पहचान न सके ।
लक्ष्मण का आचरण तो, मानस में देख लो ॥

सीता को मसमझते थे, माँ के समान लक्ष्मण ।
निगाह ऊपर की नहीं, मानस में देख लो ॥

भाभी से सख़्त पर्दा हो, यह बात सहीह है ।
पर्दा का तरीक़ा तो, मानस में देख लो ॥

शर्मो, हया व पर्दा, यह क़ीमती जौहर ।
आँख का पर्दा तो, मानस में देख लो ॥

रामचरित मानस है, सभ्यता सिखाता ।
भारत की सभ्यता तो मानस में देख लो ॥

शर्मो, हया व पर्दा, सब को है सिखाना ।
सिद्दीक़ी कह रहा है, मानस में देख लो ॥

–पिछले अंक से आगे

शादी ख़ाना आबादी

–मौलाना अब्दुल क़ादिर नदवी

एक हिकायतः–

एक कामयाब बाप अपने बेटों से कह रहा था। बेटो! मैंने तुम को कारोबार से लगाया उससे पहले अच्छी तालीम दी, उससे पहले तुम्हारी बेहतर से बेहतर जिसमानी नश्व व नमा ग़िज़ा, दवा वग़ैरह का खयाल रखा इस तरह उसने बहुत से एहसान जताये बच्चे सब सुनते रहे और जी हां, जी हां कहते रहे, फिर उसने कहा और मैंने तुम्हारे पैदा होने से पहले भी तुम पर एहसान किया सआदतमन्द बच्चों ने कहा अब्बा जान! अब तक सारी बातें और आपके एहसानात हम समझ गये और ऐतराफ करते रहे मगर यह समझ में नहीं आया कि हमारी पैदाइश से पहले आपने हम पर क्या एहसान किया? बाप ने कहा मैंने तुम्हारे लिए अच्छी मां का इन्तिखाब किया अगर खुदा न ख्वास्ता मैं तुम्हारे लिए अच्छी मां का इन्तिखाब न करता तो तुम बुरी मां के बेटे होते, और बुरी मां के बुरे बेटे होते।

बात बिल्कुल सहीह है, अच्छी ज़मीन में अच्छी चीज़ें पैदा होती हैं और बन्जर ज़मीन में बेक़ीमत या मामूली क़ीमत वाली, इसी लिए शादी से पहले मंगनी रखी गई है बल्कि इससे भी पहले कुछ राह व रस्म के ज़रिये दोनों तरफ वालों को एक दूसरे के हालात से आगाही कर लेनी चाहिए। मंगनी में खानदानी हालात के मालूम करने के साथ लड़का लड़की को देख भी सकता है, हालांकि शादी के इरादे के अलावा किसी लड़के का किसी ना महरम लड़की को देखना दुरुस्त और जाइज़ नहीं मगर शादी की गरज़ से देखना जाइज़ है ताकि बाद में सूरत देख कर यह हसरत न हो कि देख लिया होता तो अच्छा होता।

मंगनी की गरज़ दोनों तरफ वालों को एक दूसरे की तरफ से इत्मिनान हासिल करना है ताकि हां या न में फैसला करना आसान हो, उसको एक ऐसी रस्म बना लेना जिसमें अपनी बर्दाश्त से या अपने समाज के आम लोगों की बर्दाश्त से ज़ियादा खर्च हो न शरीअत में पसनदीदा है न अक़्लमन्दी की बात है।

शादी और उससे मुतअल्लिक़ बातों में ज़ियादा खर्च करना शरीअत में पसन्दीदा नहीं है इसके बरअक्स शादी में सादगी और कम खर्च पसन्दीदा बात है, हदीस में साफ तौर से बताया गया है कि सबसे ज़ियादा बरकत वाली शादी वह है जिसमें खर्च और एहतिमाम कम से कम हो, लोग खान्दानी रस्म व रिवाज के बहाने से फुजूल खर्ची करते हैं और बाद में बिला वजह परेशान होते हैं, दीन का भी नुक्सान करते हैं और दुन्या का भी।

शादी का बेहतर वक़्त और जगहः-

शादी का बेहतरीन वक़्त जुमा का दिन और अस्र के बाद है, और उसके लिए बेहतरीन जगह मस्जिद है, खास कर जामे मस्जिद, अगरचे निकाह किसी भी वक़्त और कहीं भी हो सकता है, मगर मस्जिद जैसी बाबरकत जगह छोड़ने से एक नुकसान तो उस बरकत से महरूमी का है ऐसे ही जुमा का दिन भी मुबारक है और उसमें भी अस्र बाद का वक़्त और भी ज़ियादा बरकत वाला है।

लेकिन अगर इस वक्त न कर सके तो कम अज़ कम मस्जिद और किसी भी नमाज़ के बाद मुत्तसिलन (फौरन) निकाह करने का मौक़ा तो हरगिज़ नहीं खोना चाहिए क्योंकि इन दोनों को इख्तियार करने से बहुत से गुनाहों से खुद बखुद हिफाज़त हो जाती है।

इज्तिमाई शादीः-

इज्तिमाई शादी बहुत अच्छी बात है अगर इसके साथ घरों पर छुपा कर उसके आगे पीछे की रस्में न की जायें, अगर दुन्यावी फायदा उठाने के लिए निकाह इज्तिमाई शादी में करवाया और बाद में सारी रसमें अदा कीं तो यह बड़े नुकसान की बात है और उसकी मिसाल तो एक ऐबी टट्टू जैसी है।

हिकायतः-

एक शख्स के पास बहुत अच्छा टट्टू था अपनी खूबियों में घोड़े को भी पीछे छोड़ दे ऐसा उम्दा, जो देखता उसको पसन्द करता मगर उससे उसका मालिक एक बुरी आदत की वजह से परेशान था और बेच देना चाहता था लेकिन ईमानदार आदमी था, धोखा देना भी उसको पसन्द नहीं था इसलिए खरीदार को वह उसके ऐब से आगाह कर देता जिसको सुन कर ग्राहक खरीदने से इन्कार कर देता, होते होते उसके पास एक ग्राहक आया उसने टट्टू देखा तो उसको बहुत पसन्द आया, मालिक से क़ीमत पूछी तो वह भी मुनासिब थी लेकिन जब उसने उस कीमत पर खरीदने की तैयारी बताई तो मालिक ने कहा सुनिये इसमें ऐब है उसको भी जान लीजिए तब खरीदिए बाद में हम से न कहियेगा कि आपने ऐब तो बताया ही नहीं, खरीदार ने कहा वह क्या? मालिक ने कहा यह खूब तेज रफ़्तार चलता है और उसकी चाल भी बहुत अच्छी है मगर हर आधे मील पर जा कर लीद करता है फिर रुक कर उसको सूंघने लगता है फिर आगे चलता है इसमें मन्ज़िल पर पहुंचने में देर भी हो जाती है अब भी अगर आपको पसन्द है तो क़ीमत दीजिए और टट्टू ले जाइये। खरीदार ने दिल में कहा इसका तो मैं इलाज कर लूंगा, यह कह कर क़ीमत दी और टट्टू खरीद लिया, उस वक़्त उस टट्टू के अलावा इत्तिफ़ाक़ से उसके पास कोई और सवारी भी नहीं थी इसलिए तजरिबे का अच्छा मौक़ा था, बस वहीं से उस पर सफर शुरु कर दिया और जहां उसने लीद करने की कोशिश की पहले ही इस ज़ोर से चाबुक से खबर ली कि वह बग़ैर

ठहरे चलने पर मजबूर हो गया यहां तक कि मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंच गया और यह खरीदार बहुत खुश हुआ कि मैं उसका ऐब दूर करने में कामयाब हो गया।

लेकिन जैसे ही उस पर से उतर कर उसको बांधना चाहा, टट्टू इस ज़ोर से भागा कि अपने घर आकर ही दम लिया, और रास्ते भर लीद करता रहा और सूंघता रहा।

बस जो लोग शादी में एक मौक़े पर सबके सामने सादगी इख्तियार करते हैं और फिर अलग से सारी रस्में पूरी करते हैं उनकी मिसाल इस टट्टू जैसी है।

शादी की हक़ीक़तः-

शादी की असल तो मर्द और औरत में एक मुआहदा और एग्रीमेन्ट है लेकिन इसमें चूंकि वक़्ती नहीं बल्कि ज़िन्दगी भर का मुआमला है इस लिए इसको हर समाज में एक खास अहमियत हासिल है और इसमें तक़द्दुस (पाकीज़गी) पैदा करने के लिए उसको मज़हब से जोड़ दिया जाता है और कुछ मज़हबी बातें ज़रूर अदा की जाती हैं, इसके बग़ैर शादी को जायज़ नहीं समझा जाता है, हिन्दुओं में ब्रह्मन का खास मंत्र पढ़ना, आग का तवाफ करना वग़ैरह।

और मुसलमानों के यहां कुर्आन शरीफ की आयात और हदीस शरीफ पढ़ना, उसके बाद एक मजमे के सामने अक़्द कराना वग़ैरह वग़ैरह।

इस तक़द्दुस और एहतिमाम की वजह से आमतौर पर उसको ज़िन्दगी भर निबाहने में बड़ी मदद मिलती है जहां यह नहीं है वहां आसानी से और कसरत से तलाक़ें होती हैं।

निकाह के मौक़े पर क्या पढ़ा जाता है?

निकाह जो एक आम मजमे में हुआ करता है उसमें कुर्आन मजीद की ऐसी तीन आयतें पढ़ी जाती हैं जिनमें तक़वा रिश्तेदारी की अहमियत और औलाद में बरकत की नेकफाली है लेकिन सबसे ज़ियादा जिसको बार बार दोहराया गया है वह ख़ौफे खुदा और तक़वा का हुक्म है।

यह इसलिए ताकि मर्द जो मियां–बीवी में अकसर ज़ियादा ताक़तवर होता है बीवी की महब्बत में मां पर जुल्म न करे या मां के दबाव में या जहेज़ की लालच में बीवी को न सताए, न होने वाली औलाद को होने से पहले ही फना के घाट उतारे, खुदा जो दुन्या का पैदा करने वाला है दुन्या को आबाद और हरी भरी देखना चाहता है तभी तो दुन्या में बच्चों और बच्चियों की सूरत इन्सानों को भेज रहा है।

और रिश्तेदारी की अहमियत को जता कर ये तालीम दी कि रिश्तेदारी बड़ी अहम बात है, इसके जोड़ने से खुदा खुश होता है और इसको तोड़ने से खुदा नाराज़ होते हैं, रिश्तेदारी चाहे खून की हो जैसे माँ, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी, मामू, खाला, चचा, फूफी, भाई, बहन या शादी की वजह से हो जैसे, सास, खुसर, साला, साली वगैरह।

कुर्आन मजीद ने रिश्तेदारी को निबाहने की बड़ी ताकीद की है यहां तक कि *"एक खुदा की इबादत के हुक्म के साथ वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने का भी हुक्म दिया है"।*

रिश्तेदारी का अहम फायदा रोज़ी और उम्र में बरकत है और रिश्तेदारों के साथ क़ता तअल्लुक़ी का बड़ा नुकसान उम्र और रोज़ी में बेबरकती है।

शादी में असल निकाह है जिसमें मर्द व औरत का कम अज़ कम दो मर्दों के सामने या एक मर्द और दो औरतों के सामने ईजाब व कबूल है, ईजाब का मतलब मर्द व औरत में से किसी का यह कहना कि मैंने तुम से निकाह किया और दूसरे का कहना कि मैंने कबूल किया यह कबूल है।

ईजाब व कबूल के बाद शौहर के ज़िम्मे बीवी का खाना पीना, कपड़ा लत्ता, मकान, सब हक़ वाजिब हो जाते हैं, जिसकी अदायगी मर्द पर ज़रूरी है। और इन हुकूक के अदा करने में बड़ा सवाब है इन हुकूक की अदायगी के लिए कमाने में लगना भी सवाब, यहां तक कि मियां बीवी के मिलने पर भी सवाब, और बीवी बच्चों के हुकूक की अदायगी में कोताही बड़ा गुनाह है, आदमी कितना ही इबादत गुज़ार हो जब तक उनके हुकूक की अदायगी नहीं करेगा अल्लाह के नज़दीक गुनहगार गिना जायेगा, बल्कि गुनाह के काम में तो बीवी की बात मानना ज़रूरी नहीं बाकी बातों में जहां तक हो सके बीवी बच्चों को खुश रखना चाहिए और खुशउसलूबी से उनकी दीनी, दुन्यावी तालीम और हर तरह से बेहतर तरबियत करनी चाहिए ताकि आयिन्दा ज़िन्दगी भर वह उससे फायदा उठा सकें और आपको ज़िन्दगी में आराम और मरने के बाद नेकनामी दिला सकें।

निकाह के बाद मर्द और औरत एक जोड़े की शक्ल इख्तियार कर लेते हैं। और वह महसूस करते हैं कि अब हमने ज़िन्दगी के नये मरहले में क़दम रखा है, और हमारी हैसियत अब उससे बुलन्द हो गई है जो हैसियत आज से पहले थी, जिसकी जिम्मेदारी का भी उनको एहसास होता है और ग़ैर मामूली खुशी भी होती है जिस खुशी का वह और उनके दोस्त अहबाब भी इज़हार करना चाहते हैं जिस का जुहूर उनकी ज़बान और अमल सबसे होता है।

शादी की खुशी का इज़हार कैसे किया जाये?

मर्द को अच्छी बीवी का मिलना अल्लाह की बहुत बड़ी नेअमत है लिहाजा इस नेअमत पर खुदा का शुक्र अदा करना चाहिए जिसका तरीक़ा ज़बान से भी है और अमल से भी, और सबसे बड़ा अमले शुक्र यह है कि खुदा की नाफरमानी से बचने का एहतिमाम करें।

एक अहम क़ाबिले तवज्जोह बातः-

कितनी बड़ी खुदा की नाशुक्री होगी कि उसने तो बीवी या मियां की नेअमत दी और हम उसी दिन नमाज़ जैसी अहम इबादत छोड़ दें।

कितनी बुरी बात है जो हम अपने खुदा के साथ ऐन उस वक़्त करते हैं जब वह हम को एक बहुत बड़ी नेअमत से नवाज रहा है। हज़ारों मर्द व औरतें जिनको तमन्नाओं और कोशिश के बाद इस नेअमत को हासिल करने में कामयाबी नहीं मिली और आप को खुदा ने इससे कामयाब कर दिया।

एक बड़ा नुकसानः-

शादी के नतीजे में दूसरी नेअमत औलाद है जो इन्सान के लिए बुढ़ापे का सहारा और मरने के बाद नेकनामी का बाइस होती है, नमाज़ छोड़ कर अगर इस नेअमत की बुन्याद पड़ी तो ''नमाज़ छोड़ने की'' नहूसत आपको औलाद के नेक बनाने में रुकावट बन सकती है, इस लिए इस मौक़े पर तो खास कर खुद भी नमाज़ पढ़नी चाहिए और बीवी को भी पढ़ानी चाहिए, बल्कि कम अज़ कम उस दिन की नमाज़ें छूटी हों तो उनकी कज़ा भी मियां बीवी के मिलने से पहले कर लेनी चाहिए।

नमाज़ अल्लाह का हुक्म है, अल्लाह के नबी की आंखों की ठंडक है, तमाम औलिया अल्लाह और नेक मुसलमानों का तरीक़ा है और उसका छूटना शैतानी काम है।

इज़हारे मसर्रतः-

शादी के मौक़े पर खुशी में अच्छे कपड़े पहनना और जायज़ तरीक़े पर गाना बजाना एक दूसरे को मुबारकबाद देना जायज़ और बेहतर बल्कि सवाब है, और मर्दों या औरतों को सड़कों पर नाचना, बेशर्मी वाले गाने गाना बैण्ड बाजा वग़ैरह गुनाह के काम हैं जिससे सुन्नी, शिया, देवबन्दी, बरेलवी का कोई मसला नहीं।

ऐ काश!:-

काश की सब मुसलमान जिस तरह निकाह एक तरह करते हैं उसी तरह सहाब-ए-किराम की तरह खुशी मनाने का तरीक़ा भी एक बना लें, यहां तक कि सब लोग जान लें कि उनके यहां शादी सिर्फ इसी तरह मनाई जाती है, सहाबा के यहां शादी के मौक़े पर छोटी बच्चियां जिनकी उम्र इस ज़माने में 9 .10 साल से ज़ायद न होनी चाहिए जायज़ गाने गाती थीं और दफ बजाती थीं, दफ बड़ी छलनी के मानिन्द जो एक तरफ से ढोल की तरह मंढी हुई और दूसरी तरफ खाली हो नीज़ उसमें घुंघरू वगैरह न लगे हों, गानों में खुश आमदीद का मज़मून और पूर्वजों के कारनामों का ज़िक्र वगैरह हो।

वलीमाः-

शादी के मौक़े पर रुखसती और मिलाप के बाद या उससे कुछ पहले और अहम मसलहत हो तो निकाह के वक़्त निकाह से भी पहले रिश्तेदारों और दोस्त व अहबाब को खिलाना और उनकी दावत करना भी सुन्नत है जिस पर खिलाने वाले और खाने वालों को सबको सवाब मिलता है।

❖❖❖

न्याय की दुनिया

—डॉ0 मुहम्मद अहमद

समाज की सुरक्षा व हित के लिए न्याय का व्यवहार नितान्त आवश्यक है। न्याय से वंचित समाज प्रगति एवं उन्नति के मार्ग पर न चल सकता है और न कभी फल—फूल ही सकता है। न्याय मानवजाति का वह अधिकार है, जिसको न धन—दौलत से खरीदा जा सकता है और न बलपूर्वक छीना जा सकता है। आप देख लीजिए कि जिस समाज ने धन, शक्ति और वैभव के बल पर न्याय को दबाना चाहा है, उसको इतिहास ने माफ़ नहीं किया और न भविष्य में ही क्षमा करेगा। एक दिन ऐसा अवश्य आएगा, जब न्याय का गला घोंटनेवालों का गला घोंटा जाएगा। दुखी मानवता को शक्ति से दबानेवालों को स्वयं की दुखों की चक्की में पिसना पड़ेगा।

इस संसार का यह अटल नियम है, जिसको कोई व्यक्ति अपनी मूर्खता से बदल नहीं सकता। वे लोग बहुत शीघ्र अपने—आपको भुला देते हैं, जो न्याय की कुर्सियों पर बैठते हैं कि वे कितनी बड़ी परीक्षा दे रहे हैं, जिनके एक—एक क्षण और एक—एक अक्षर का मानवता के न्यायगृह में हिसाब किया जाएगा। अगर इससे बच कर निकल गए, तो अल्लाह और ईश्वर की अदालत से किसी भी प्रकार से बच कर नहीं निकल सकेंगे।

इस सिलसिले में इस्लामी शिक्षाओं ने किसी का पक्ष नहीं लिया है, बल्कि साफ़—साफ़ उन लोगों को होशियार रहने का आदेश दे दिया है, जो न्यायाधीश की कुर्सियों पर विराजमान हैं। अन्याय करने वालों को कठोर से कठोर दण्ड की चेतावनी दी गई है, इसीलिए इस्लामी न्याय इतिहास के पन्नों में उदाहरण बन गया। न्याय के सिलसिले में अल्लाह कहता है—

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, न्याय व इन्साफ़ के ध्वजावाहक और अल्लाह के लिए गवाह बनो, यद्यपि तुम्हारा इन्साफ़ और तुम्हारी गवाही स्वयं तुम्हारे अपने या तुम्हारे मां—बाप और नाते दारों के विरुद्ध ही क्यों न पड़ती हो। मामले से संबंध रखने वाला पक्ष चाहे धनवान हो या निर्धन, अल्लाह तुम से अधिक उनका हितैषी है। अतः अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो और अगर तुमने लगी—लिपटी बात कही या सच्चाई से पहलू बचाया तो जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है"।

(सूरः निसा—135)

एक इन्सान के लिए न्याय का मार्ग अपनाना कुछ मुश्किल नहीं है मगर उसकी आज़माइश उस समय हो जाती है, जब कोई समस्या स्वयं उसके या उसके परिवार के सामने आ जाती है। यही वह अवसर होता है जब उसके न्याय व इन्साफ़ की पोल खुल जाती है। ऐसी स्थिति में अल्लाह फरमाता हैः—

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह के लिए औचित्य पर क़ायम रहने

वाले और इन्साफ़ की गवाही देने वाले बनो। किसी गिरोह की दुश्मनी तुम को इतना उत्तेजित न कर दे कि इन्साफ़ से फिर जाओ। इन्साफ़ करो, यह ईश भक्ति और विनम्रता से अधिक अनुकूल है। अल्लाह से डर कर काम करते रहो।''

(सूरः माइदा–8)

एक अवसर पर ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने अपनी चहेती बेटी फ़ातिमा को भी दण्ड देने की बात कर दी थी।

घटना इस प्रकार है कि मक्का में एक औरत रहती थी, जिसका संबंध मख़ज़ूम क़बीले के एक प्रतिष्ठित परिवार से था। एक बार उसने चोरी की और पकड़ी गई। परिणाम स्वरूप उसे उसका हाथ काटने की सज़ा मिली। उस औरत का नाम फ़ातिमा था। ईशदूत मुहम्मद सल्ल0 की बेटी का नाम भी फ़ातिमा था। इस्लाम से पूर्व अरब में प्रतिष्ठित लोगों के लिए जो क़ानून था, उससे भिन्न क़ानून उन लोगों के लिए था, जो कमज़ोर वर्ग के थे। उनमें से एक ऊँचे घराने की अपराधी औरत को अन्ततः सज़ा मिल कर रहेगी, इस बात से बनी मख़ज़ूम क़बीले के लोग खुश न थे। (यह चोरी की घटना उस समय की है, जब अरब के लोग क़बीले के क़बीले इस्लाम धर्म स्वीकार कर रहे थे और बहुत से लोग इस्लाम क़बूल कर चुके थे)।

वे आपस में कहने लगे, ''यह कैसे हो सकता है? क्या उस औरत को बचाने के लिए कोई राह नहीं निकल सकती।'' चिन्ता बढ़ती गई। प्रश्न यह था कि ईशदूत मुहम्मद सल्ल0 को इस बात पर कैसे सहमत किया जाए कि फ़ातिमा (अपराधी औरत) को दण्ड से बचाया जा सके। वे भली भांति जानते थे कि अल्लाह की निर्धारित की हुई सज़ा में नर्मी बरतने के लिए आप सल्ल0 से कहना व्यर्थ होगा।

अतः कबील–ए–बनी मख़ज़ूम के लोग इस निर्णय पर पहुंचे कि इस कार्य में उसामा बिन जैद रज़ि0 की सहायता ली जाए। उसामा रज़ि0 ईशदूत मुहम्मद सल्ल0 के मुंह बोले बेटे ज़ैद बिन हारिसा रज़ि0 के बेटे थे। आप सल्ल0 उसामा से बहुत प्यार करते थे। बनी मख़ज़ूम के लोग उसामा रज़ि0 के पास गए और उस अपराधी और फातिमा के बारे में पूरी बात बताई। उन लोगों की पूरी बात सुन लेने के बाद उसामा रज़ि0 ने कहा कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल0 को इस बात पर राज़ी करने की पूरी कोशिश करूंगा कि आप फ़ातिमा के दण्ड के मामले में नर्मी बरतें।

उसामा रज़ि0 अवसर की प्रतीक्षा करने लगे, यहां तक कि उन्होंने रसूल सल्ल0 को अकेले में पा लिया और अपनी बात कहनी शुरु की। उसामा रज़ि0 जितनी शीघ्रता से बात कह सकते थे, कह रहे थे। तभी नबी सल्ल0 ने उनकी तरफ़ से मुंह फेर लिया और उसामा रज़ि0 समझ गए कि रसूल सल्ल0 उनकी बातों से अप्रसन्न हो गए हैं।

शाम को नमाज़ के बाद ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 लोगों को संबोधित करने के लिए खड़े हुए और फ़रमाया ''अल्लाह महान है।

तुम से पहले की कई क़ौमों का पतन हुआ और वे कमज़ोर हुईं और अन्ततः विनष्ट हो कर रहीं, केवल इसलिए कि उनमें जब उच्च वर्ग का कोई प्रतिष्ठित व कुलीन व्यक्ति अपराध करता तो वे उसे छोड़ देते, और जब कमज़ोर वर्ग का कोई निर्धन व्यक्ति वही अपराध करता तो उसे दण्ड देते। मैं क़सम खाता हूं उसकी, जिसके हाथ में मेरी जान है यदि मेरी चहेती बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काटने का आदेश देता''।

अगर आप इस्लामी इतिहास पर एक उचटती हुई नज़र भी डाल दें, तो आपका सिर गर्व से ऊँचा उठ जाएगा। विश्व में संभवताः कोई ऐसा राज्य न होगा, जिसके संविधान में न्याय और इन्साफ़ के संबंध में विशेष धाराएं मौजूद न हों। किन्तू विश्व के किसी राज्य के पास ऐसा संविधान मौजूद नहीं है, जिसकी पीठ पर ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी होने का विश्वास मौजूद हो। यह विशेषता केवल इस्लामी संविधान को प्राप्त है। यही कारण है कि आज विश्व के हर राज्य में न्याय और इन्साफ़ की दुर्दशा हो रही है और सबसे अधिक न्याय की दुर्दशा शासक वर्ग के हाथों हो रही है। जो न्याय को स्थापित करने का उत्तरदायी है, वही न्याय के नियमों को अपने लाभ और उद्देश्यों के अनुसार उपयोग कर रहा है और न्याय के नाम पर अपने विरोधियों पर खुल्लम–खुल्ला अत्याचार कर रहा है। शासक वर्ग ने ऐसे नियम बना रखे हैं, जिनके द्वारा जिसको चाहते हैं न्यायलय में मुक़दमा चलाए बिना जेल में डाल देते हैं और उसे स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित कर देते हैं, जो अन्याय है। आमतौर पर इस तरह की ख़बरें मीडिया के ज़रिए सुनने में आती रहती हैं।

इस्लामी शासन में सबसे सरल काम न्याय प्राप्त करना था। वह भी किसी ख़र्च के बिना लोग सच्चा न्याय प्राप्त कर लेते थे। इसका कारण यह था कि इस्लामी शासन का नियम मनुष्यों का बनाया हुआ न था, ईश्वरीय नियम था। इसलिए शासक व प्रजा दोनों के दिलों में उसका सच्चा सम्मान था। उसकी अवज्ञा को शासक व प्रजा दोनों लोक–परलोक के विनाश तुल्य समझते थे। इस विधान की पीठ पर ईश्वर और ईश सन्देश की ताड़नाएं और चेतावनियां भी मौजूद थीं, जिन पर उनका सच्चा विश्वास था और वे उनकी अवहेलना का साहस नहीं कर सकते थे रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया–

''क़ियामत के दिन न्याय करने वाले न्यायाधिकारी (क़ाज़ी) के समक्ष भी ऐसा ईश्वर का भय होगा कि वह चाहेगा कि काश! उसने एक खजूर के संबंध में भी दो व्यक्तियों के बीच निर्णय न किया होता''।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 जब इस्लामी शासन के पहले खलीफ़ा हुए तो न्याय व इन्साफ़ संबंधी एवं महाईशदूत हज़रत मुहममद सल्ल0 की शिक्षा और आदेश उनके सामने थे। इसलिए उन्होंने मुसलमानों के समूह में जो प्रथम भाषण दिया, उसमें अपने शासन की नीति बयान करते हुए घोषणा की–

''तुम्हारे बीच जो निर्बल है, वह मेरे निकट बलवान है, यहां तक कि उसका छीना हुआ अधिकार उसको पुनः वापस दिला दूं और तुम्हारे बीच जो बलवान है, वह मेरे निकट निर्बल है, यहां तक कि मैं उससे उस अधिकार को प्राप्त कर लूं, जो उसने हनन कर रखा है''।

इसी प्रकार इस्लामी राज्य के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 हुए, तो उन्होंने अपने संबोधन में फरमाया–

''मैं किसी व्यक्ति को इसका अवसर न दूंगा कि वह किसी का अधिकार छीने या किसी पर कोई अत्याचार करे। जो व्यक्ति ऐसा करेगा उसका एक गाल मैं धरती पर रखूंगा और उसके दूसरे गाल पर अपना पांव रखूंगा'' यहां तक कि वह सत्य के सामने झुक जाए''।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने ऐसे नियम बना दिए थे कि ग़रीब–से–ग़रीब आदमी को न्याय प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो। न्यायालय में मुक़दमा पेश करने से लेकर फ़ैसला पाने तक किसी प्रकार व्यय नहीं करना पड़ता था। निर्धन–से–निर्धन व्यक्ति क़ाज़ी के पास पहुंच कर मुक़दमा दाख़िल कर देता और उसे आसानी से न्याय मिल जाता। न्यायाधीशों को आदेश था कि कोई निर्धन व असहाय व्यक्ति वादी बन कर आए तो उसके साथ नम्रता व सहिष्णुता का व्यवहार किया जाए, ताकि वह अपना वाद उपस्थित करने में किसी प्रकार का दबाव न महसूस करे।

न्याय व इन्साफ़ से संबंधित एक दूसरा उदाहरण है कि एक बार इस्लामी राज्य के ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के पुत्र अब्दुर्रहमान ने मिस्र में शराब पी। होश आया तो स्वयं ही मिस्र के शासक हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 की सेवा में उपस्थित हुए और अपने अभियोग को स्वीकार करके प्रार्थना की कि उन्हें शराब पीने की सज़ा दी जाए। हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 ने डॉट डपट कर टाल देना चाहा, किन्तु अब्दुर्रहमान जानते थे कि मिस्र के शासक ने उनको क्षमा भी कर दिया तो क्या हुआ, क़ियामत के दिन अल्लाह क्षमा न करेगा और वे परलोक के अपमान से बच न सकेंगे। इसलिए उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा कि उनको सज़ा दी जाए, वरना वे मदीना जा कर इस्लामी राज्य के शासनाध्यक्ष हज़रत उमर रज़ि0 से शिकायत करेंगे। उनके इस आग्रह पर मिस्र के शासक ने अपने आवास के प्रांगण में उनको सज़ा दी।

इस घटना की सूचना जब हज़रत उमर रज़ि0 को मिली तो उन्होंने मिस्र के शासक को ताड़नापूर्वक यह पत्र लिखा–

''ऐ इब्ने आस! मुझको तुम्हारी धृष्टता और प्रतिज्ञा–भंग पर आश्चर्य है। मेरे निकट तुम मिस्र की गवर्नरी के पद से हटा दिए जाने योग्य हो। तुमने अब्दुर्रहमान को अपने आवास के प्रांगण में सज़ा दी और मकान के अन्दर ही उसका सिर मूण्डा। यद्यपि तुम्हें भलीं–भांति मालूम है कि इस प्रकार का पक्षपात मेरे नियम के विरुद्ध है। अब्दुर्रहमान तुम्हारी प्रजा में से एक था। तुम्हें चाहिए था कि जिस प्रकार तुम दूसरों के साथ

व्यवहार करते हो, उसी प्रकार उसके साथ भी करते। किन्तु तुम ने उसके साथ जो व्यवहार किया है, इस विचार से कि वह इस्लामी राज्य के शासनाध्यक्ष का बेटा है। यद्यपि तुम जानते हो कि मैं न्याय के संबंध में किसी के साथ पक्षपात से काम नहीं लेता। इसलिए तुम को आदेश देता हूं कि मेरा पत्र पाते ही अब्दुर्रहमान को मेरे पास भेज दो, ताकि मैं उसको उसके किए का मज़ा चखाऊं''। एक कथनानुसार हज़रत उमर फारूक़ रज़ि0 ने अपने पुत्र अब्दुर्रहमान को जनता के समूह के समक्ष पुनः सज़ा दी।

क्या इस्लामी राज्य और इस्लामी समाज के अतिरिक्त भी सत्यप्रियता और न्यायशीलता के ऐसे विचित्र दृश्य देखे जा सकते हैं? दोषी दोष छिपाता है और अपने आपको बचाने की भरपूर चेष्टा करता है, किन्तु वास्तविक इस्लामी समाज का एक दोषी स्वयं अपने को सज़ा प्राप्त करने के लिए उपस्थित करता है और उसके साथ नरमी की जाती है, तो वह शासक को धमकी देता है कि मुझे सज़ा दो अन्यथा तुम्हारी शिकायत इस्लामी राज्य के शासनाध्यक्ष से करूंगा।

भारत वर्ष में मुसलमानों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया तो उनका उद्देश्य अंग्रेज़ों की तरह भारत को अपना उपनिवेश बना कर इसे लूटना फिर यहां की धन दौलत से अपने देश को भरना कदापि नहीं था। वे यहां आए तो भारत को ही सदैव के लिए अपना देश बना लिया और यहां की दौलत यहां से कहीं और नहीं जाने दी। उन्होंने भारत को खुशहाली और अमन चैन, शांति का देश बनाने के लिए हर संभव उपाय किये और न्याय तथा इन्साफ़ की बुन्यादों पर हुकूमत क़ायम करने और चलाने की भरपूर कोशिश की। भारत को एक महान देश बनाने के लिए उन्होंने उत्तोत्तर संघर्ष किया और इसे अखण्ड राष्ट्र का व्यावहारिक रूप दे कर छोटे छोटे राज्यों को एक लड़ी में गूंध कर भारत को एक महान एवं शक्तिशाली देश बना दिया।

इन्साफ और न्याय प्रियता मुस्लिम बादशाहों का विशिष्ट गुण रहा है। जनकल्याण और न्यायशीलता की इस्लामी शिक्षाएं उनका लक्ष्य थीं। हज़रत बख़्तियार काकी रह0 की पुस्तक वाणी संग्रह के ''फ़वाएदुस्सालिकीन'' में है कि ''अलतमिश'' की ओर से आम अनुमति थी कि जो लोग फ़ाक़ा करते हों उसके पास लाए जाएं। जब वे लाए जाते तो वह उनमें से प्रत्येक को कुछ न कुछ देता और उन्हें क़स्में दे कर नसीहत करता कि जब उनके पास खाने पीने को कुछ न रहे या उन पर कोई अत्याचार करे तो वे यहां आकर न्याय की ज़ंजीर, जो बाहर लटकी हुई है, हिलाएं ताकि वह उनके साथ न्याय कर सके, नहीं तो क़ियामत के दिन उनकी फ़रियाद का बोझ वह सहन नहीं कर सकेगा।

ग़ियासुद्दीन बलबन के बारे में मौलाना ज़ियाउद्दीन बर्नी ने लिखा है कि वह दान, अनुदान, पुरस्कार एवं न्याय करने में भाइयों, लड़कों और रिश्तेदारों का

शेष पृष्ठ....40 पर

इल्म की कद्र

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्मबल रह0 बहुत बड़े विद्वान गुज़रे हैं। इस्लामी फिक्ह (विधि) के चार प्रसिद्ध विद्वानों में से एक हैं। उन्हीं का वाक्या है कि एक बार मक्का हज को गए। साथ में एक दोस्त हज़रत यह्या बिन मुईन भी थे।

संयोग से हज के दौरान हज़रत अब्दुर्रज्ज़ाक बिन हुमाम रह0 से भेंट हो गई जो इस्लामी जगत के बड़े विद्वानों में गिने जाते थे और यमन के सनआ नामक क्षेत्र में रहते थे। इमाम साहब की बड़ी तमन्ना थी कि हज़रत अब्दुर्रज्ज़ाक रह0 से इल्म हासिल करें। अतः परिचय और कुशलक्षेम की औपचारिकता के उपरान्त हज़रत मुईन ने हज़रत अब्दुर्रज्ज़ाक रह0 से कहा, हज़रत! कल हम आपकी सेवा में उपस्थित हो कर हदीस का कुछ इल्म हासिल करना चाहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, शौक़ से आइये। यह कह कर उन्होंने इन लोगों से विदा लिया।

लेकिन ये बात इमाम हम्बल को भली न मालूम हुई। इसलिए कि हज़रत अब्दुर्रहमान सनआ में दरस (शिक्षा) देते थे और इमाम हम्मबल रह0 के मन के अनुसार किसी ज्ञान के आकांक्षी के लिए उचित नहीं है कि इल्म हासिल करने के लिए शार्टकट या बैक दरवाज़ा का सहारा ले। अतः हम्मबल रह0 ने अपने मित्र मुईन रह0 से कहा ये तुमने क्या किया, हज़रत से तुमने कल का वादा ले लिया वह भी यहां? हज़रत मुईन रह0 ने कहा, इसमें क्या दिक्कत है, तुम्हारा यात्रा सम्बन्धी खर्च भी बच जाएगा। इमाम साहब ने कहा, नहीं, नहीं ये गलत है, मैं इसे ज्ञान प्राप्ति के सिद्धान्त के विरुद्ध समझता हूं, ये क्या जहां गुरु को देखा धर लिया। मैं तो यमन जाऊँगा और वहीं उनकी सेवा में उपस्थित होऊँगा। इतः इमाम साहब ने पाई—पाई जुटाई और इल्म की रौशनी हासिल करने यमन गए। हालांकि इमाम साहब बहुत गरीब थे।

पवित्र कुर्आन में है ''मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तुम में सबसे बेहतरीन शख्स वह है जो कुर्आन सीखे और सिखाए''(तिर्मिज़ी)। अतः हज़रत अब्दुर्रहमान भी उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने पहले कुर्आन सीखा और अब सीखाने का काम कर रहे थे, इसीलिए ये इमाम साहब ने चाहा कि कुर्आन और हदीस जैसा महत्वपूर्ण ज्ञान सीखना है तो हमें उसके सिखाने वाले का सम्मान करते हुए उसके ड्योढ़ी पर जाना चाहिए, ये क्या जहां पाया वहीं फरमाइश कर डाली।

ये इल्म की ही कद्र थी कि जिसके कारण उन्हें इमाम की उपमा मिली। इस्लाम धर्म में बहुत कम लोगों को इमाम की उपमा से सुशोभित किया गया है।

अब आइये इस दौर

में। आज ज्ञान और गुरू का कितना सम्मान बचा है, सब जानते हैं। आए दिन पिता रूपी गुरू को स्टूडेन्ट द्वारा मारने–पीटने की घटना सुनने में आती रहती है। किताबों और पुस्तकों का कोई सम्मान हनीं बचा है, ये चीज़ें स्कूलों और कॉलेजों में अत्यधिक पाई जाती हैं। मदरसे के तालिब इल्मों में ऐसी हरकतें न के बराबर पाई जाती हैं। वहां आज भी उस्ताद को बाप का दर्जा दिया जाता है।

बात यह है कि अब अधिकांश स्कूलों व कॉलेजों में मानव नहीं बल्कि मशीन बनाया जाता है, दिल की जगह पैसा और दिमाग की जगह कैलकुलेटर रखा जाता है।

आज भ्रष्टाचार, व्यभिचार, हत्या, धोखा और झूट का जो दानव विकराल रूप ले रहा है उसे तभी समाप्त किया जा सकता है जब हम स्टूडेन्ट को नैतिकता की घुट्टी पिलाएंगे। जब हम पैसे को सर का ताज बनाने के बजाय पैर की चप्पल बनाएंगे, तभी स्वच्छ, सभ्य और खुशहाल समाज की रचना की जा सकेगी। ◆◆

न्याय की दुन्या .....

बिल्कुल ख़याल नहीं करता था और जब तक मज़लूम के साथ न्याय न कर लेता, उसके दिल को आराम व शांति नहीं पहुंचती। उसके न्याय और इंसाफ़ के क़िस्से बहुत प्रसिद्ध हैं। उस काल के हिन्दुओं ने भी खुले दिल से उसकी हुकूमत की प्रशंसा की है। 1337 विक्रमी तद्नुसार 1280 ई0 का एक संस्कृत शिलालेख पालम में मिला है, जिसमें लिखा है कि बलबन के राज्य में खुशहाली है। उसकी बड़ और अच्छी हुकूमत में ग़ौर से ग़ज़ना और द्रविड़ से रामेश्वरम तक हर जगह ज़मीन पर बहार ही बहार की मोहकता फैली है। उसकी सेना ने ऐसा अमन व शांति स्थापित की है, जो हर व्यक्ति को प्राप्त है। सुलतान अपनी प्रजा की देख भाल इतने अच्छे तरीक़े से करता है कि खुद विष्णु दुन्या की चिंता से मुक्त हो कर दुग्ध सागर में जा कर सो रहे हैं।

मुग़लकाल से पूर्व के दिल्ली के मुस्लिम बादशाहों ने न्याय व इन्साफ़ की जो परंपरा स्थापित की, उसे मुग़ल बादशाहों ने और भी शानदार तरीक़े पर बरक़रार रखा। बाबर ने अपनी "तुज़ुक" (शाही रोज़नामचे) में स्वयं लिखा है कि उसकी सेना भीरह से गुज़र रही थी, तो उसे मालूम हुआ कि सिपाहियों ने भीरह वासियों को सताया है और उन पर हाथ डाला है, तो तुरंत उन सिपाहियों को गिरफ़्तार करके कुछ की नाकें काटवाकर और कुछ को मृत्यु की सजा दे कर सब को उनकी करतूतों के बारे में बताया।

"इस्लाम, मुसलमान और ग़ैर–मुस्लिम"

मानव समाज की भलाई और कामयाबी के लिए ईश्वरीय ग्रन्थ कुर्आन द्वारा प्रस्तुत न्याय और उसके सिंद्धान्त को त्याग देने के कारण आज मानवता सिसक रही है, क्योंकि न्याय और इन्साफ़ के दरवाज़े निर्धनों तथा निर्बलों के लिए बन्द हो चुके हैं। अब जब तक उनको फिर से नहीं खोला जाएगा, उस समय तक समाज को सिसकना पड़ेगा।

❖❖❖

(हिन्दी मासिक कान्ति फरवरी 2018 से ग्रहीत)

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

۱۔ مسلمان صرف اور صرف اللہ کی عبادت کرتا ہے۔
۲۔ مسلمان غیر اللہ کی عبادت کو شرک سمجھتا ہے۔
۳۔ مسلمان صرف اللہ سے دعائیں مانگتا ہے۔
۴۔ مسلمان صرف حلال روزی کھاتا ہے۔
۵۔ مسلمان سود، رشوت، چوری، ڈکیتی کا مال نہیں کھاتا ہے۔
۶۔ مسلمانوں کے لیۓ بعض جانوروں کو ذبح کر کے ان کا گوشت کھانا حلال ہے۔
۷۔ مسلمانوں کو حکم ہے کہ وہ عید اضحیٰ میں کچھ مخصوص جانوروں کی قربانی کریں۔
۸۔ مسلمان عید اضحیٰ میں جانوروں کی قربانی کر کے ان کا گوشت کھاتے ہیں۔
۹۔ مسلمانوں کو اللہ کے احکام آخری نبیؐ کے ذریعہ ملے ہیں۔
۱۰۔ مسلمان اپنے نبیؐ پر درود وسلام پڑھتے ہیں۔
1. मुसलमान सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की इबादत करता है।
2. मुसलमान ग़ैरुल्लाह की इबादत को शिर्क समझता है।
3. मुसलमान सिर्फ अल्लाह से दुआएं मांगता है।
4. मुसलमान सिर्फ हलाल रोज़ी खाता है।
5. मुसलमान सूद, रिशवत, चोरी, डकैती का माल नहीं खाता है।
6. मुसलमानों के लिए बाज जानवरों को जब्ह करके उनका गोश्त खाना हलाल है।
7. मुसलमानों को हुक्म है कि वह ईदे अज़्हा में मख्सूस जानवरों की कुर्बानी करें।
8. मुसलमान ईदे अज़्हा में जानवरों की कुर्बानी कर के उन का गोश्त खाते हैं।
9. मुसलमानों को अल्लाह के अहकाम आखिरी नबी के जरिए मिले हैं।
10. मुसलमान अपने नबी पर दुरूद व सलाम पढ़ते हैं।

नदवतुल उलमा
पो0 बा0–93, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007 यू0पी0 (भारत)

ندوة العلماء
پوسٹ باکس ۹۳، ٹیگور مارگ، لکھنؤ
۲۲۶۰۰۷ یوپی (ہند)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अहले ख़ैर हज़रात से!

खुदा का शुक्र है कि हम उन बेश कीमत उसूलों को सीने से लगाये हुए हैं जिन के लिए दारुल उलूम कायम किया गया था यानी जदीद ज़माने में इस्लाम की मुवस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन दुन्या की जामिइय्यत और इल्म व रूहानियत के इज्तिमाअ़ की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और जेहनी इरतिदाद का मुकाबला इस्लाम पर ऐतमाद और उलूमे इस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इजहार, दीने हक से वफादारी और शरीअ़त पर इस्तिकामत, हमारे नजदीक मालियात, बजट और अजीमुश्शान इमारतों के मुकाबले में इन मजकूरा मकासिद का हुसूल ज़ियादा अहम है। मस्अले की इस क़दर तशरीह और वज़ाहत के बाद अब ज़ियादा कुछ कहने की हाजत नहीं।

इन गुजारिशात के बाद आपसे हमारी दरख्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम की इफादियत को समझते हुए पूरी फराखदिली, फय्याजी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफाजत का इससे बेहतर कोई रास्ता और इस से ज़ियादा पायदार कोई सदक–ए–जारिया नहीं, आप में से जो लोग नदवतुल उलमा के पचासी साला जश्न में शरीक थे, उनको याद होगा कि नदवतुल उलमा के पचासी साला इजलास को खिताब करते हुए हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 ने गैर मुल्की मुअ़ज्जज महमानों की ओर इशारा करते हुए फरमाया था **"यह सोने की चिड़ियां सब उड़ जायेंगी, हम और आप यहां रहेंगे, आप यह न समझें कि अब आपको छुट्टी मिल गई, हम आप को छोड़ने वाले नहीं, हमारे सफीर आपके घरों पर जायेंगे, आप के चार आने, आठ आने, हम को अज़ीज़ हैं, वह उस दौलत का हजारवां हिस्सा होगा जो खुदा ने इन को दिया है, और आप जो देंगे वह आपके गाढ़े पसीने की कमाई होगी।"**

हिन्दुस्तान के मुसलमानों से चाहे वह इस लम्बे चौड़े देश के किसी इलाके के हों, हमारी मुकर्रर पुनः दरख्वास्त है कि वह इस काम की अहम्मीयत को समझें और इस को अपना ही काम समझें, हमें यक़ीन है और अल्लाह तआला की जाते आ़ली पर पूरा भरोसा है कि इन्शाअल्लाह नाजिम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सय्यद मु0 राबे हसनी नदवी मद्दाजिल्लुहु की बेश क़ीमत रहनुमाई व निज़ामत में अगर अहबाब व मुख्लिसीन ने पूरी दिलचस्पी ली तो हमारा यह पैगाम न सिर्फ मुल्क के बल्कि आलमे इस्लाम के कोने कोने में पहुंचेगा।

मौलाना मुहम्मद वाजेह रशीद नदवी
(मोतमद तालीम नदवतुल उलमा)
प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल नदवतुल उलमा)

मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी
(प्रिंसपल दारुल उलूम नदवतुल उलमा)
मौलाना मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
(नायब नाजिम नदवतुल उलमा)

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें:–
नदवतुल उलमा/NADWATUL ULAMA
अतिया– **A/c. No. 10863759711**
ज़कात– **A/c. No. 10863759766**
State Bank of India, Main Branch, Lucknow,
IFS Code: SBIN0000125, Swift Code: SBININBB157

–:और इस पते पर भेजें:–
NAZIM NADWATUL ULAMA
NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA
TAGORE MARG, LUCKNOW-226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741231, 2741316, 2740151, Fax: 0522-2741221
E-mail: nadwa@bsnl.in/website: www.nadwatululama.org